हिंदी-विभाग
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र
(प्रदेश विधायिका एक्ट 12ए 1956 के तहत स्थापित)

('ए+ श्रेणी' राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद द्वारा प्रदत्त)

बी ए (आनर्स) हिंदी पाठ्यक्रम
सी. बी. सी. एस. (चयन-आधारित क्रेडिट पद्धति), सत्र 2020-21 से लागू

कोर्स कोड	कोर्स का नाम	क्रेडिट	शिक्षण घंटे / प्रति सप्ताह	परीक्षा की स्कीम (अंक)			
				परीक्षा	आंतरिक मूल्यांकन	कुल अंक	समय
सेमेस्टर - I							
BH-HIN-CC-101	हिंदी साहित्य का इतिहास (रीतिकाल तक)	6	6	80	20	100	3 घंटे
BH-HIN-CC-102	हिंदी साहित्य का इतिहास (आधुनिक काल)	6	6	80	20	100	3 घंटे
BH-HIN-AECC-103	हिंदी व्याकरण और संप्रेषण	2	2	40	10	50	1.30 घंटे
BH-HIN-GE-104	कला और साहित्य	6	6	80	20	100	3 घंटे
सेमेस्टर - II							
BH-HIN-CC-201	आदिकालीन एवं मध्यकालीन हिंदी कविता	6	6	80	20	100	3 घंटे
BH-HIN-CC-202	आधुनिक हिंदी कविता (छायावाद तक)	6	6	80	20	100	3 घंटे
BH-HIN-AECC-203	हिंदी भाषा और संप्रेषण कौशल	2	2	40	10	50	1.30 घंटे
BH-HIN-GE-204	हिंदी की सांस्कृतिक पत्रकारिता	6	6	80	20	100	3 घंटे
सेमेस्टर - III							
BH-HIN-CC-301	छायावादोत्तर हिंदी कविता	6	6	80	20	100	3 घंटे
BH-HIN-CC-302	भारतीय काव्यशास्त्र	6	6	80	20	100	3 घंटे
BH-HIN-CC-303	पाश्चात्य काव्यशास्त्र	6	6	80	20	100	3 घंटे
BH-HIN-SEC-304	रचनात्मक लेखन	2	2	40	10	50	1.30 घंटे
BH-HIN-GE-305	संपादन प्रक्रिया और साज सज्जा	6	6	80	20	100	3 घंटे

सेमेस्टर - IV							
BH-HIN-CC-401	भाषा विज्ञान और हिंदी भाषा	6	6	80	20	100	3 घंटे
BH-HIN-CC-402	हिंदी उपन्यास	6	6	80	20	100	3 घंटे
BH-HIN-CC-403	हिंदी कहानी	6	6	80	20	100	3 घंटे
BH-HIN-SEC-404	अनुवादः सिद्धांत और प्रविधि	2	2	40	10	50	1.30 घंटे
BH-HIN-GE-405	आधुनिक भारतीय कविता	6	6	80	20	100	3 घंटे
सेमेस्टर - V							
BH-HIN-CC-501	हिंदी नाटक एवं एकांकी हिंदी	6	6	80	20	100	3 घंटे
BH-HIN-CC-502	हिंदी निबंध एवं अन्य गद्य विधाएं	6	6	80	20	100	3 घंटे
BH-HIN-DSE-503	राष्ट्रीय काव्यधारा	2	2	40	10	50	1.30 घंटे
BH-HIN-DSE-504	प्रेमचंद	2	2	40	10	50	1.30 घंटे
BH-HIN-GE-505	सर्जनात्मक लेखन के विविध क्षेत्र	6	6	80	20	100	3 घंटे
सेमेस्टर -VI							
BH-HIN-CC-601	हिंदी की साहित्यिक पत्रकारिता	6	6	80	20	100	3 घंटे
BH-HIN-CC-602	प्रयोजनमूलक हिंदी	6	6	80	20	100	3 घंटे
BH-HIN-DSE-603	अस्मितामूलक विमर्श और हिंदी साहित्य	2	2	40	10	50	1.30 घंटे
BH-HIN-DSE-604	लोक साहित्य	2	2	40	10	50	1.30 घंटे
BH-HIN-GE-605	पाश्चात्य दार्शनिक चिंतन एवं हिंदी साहित्य	6	6	80	20	100	3 घंटे

पाठ्यक्रम के अपेक्षित परिणाम

- व्यवहारिक व व्यावसायिक जीवन में भाषा का विशेषकर हिंदी भाषा का सही प्रयोग कर सकेगा।
- हिंदी भाषा के विकास के माध्यम से भाषा के सैद्धांतिक पहलुओं तथा उसके परिवर्तन की दिशाओं का बोध होगा।
- हिंदी साहित्य की विभिन्न धाराओं व परंपराओं की समझ विकसित होगी। विभिन्न युगों, धाराओं व रचनाकारों के साहित्य की विशिष्टताओं की समझ बढ़ेगी।
- समकालीन साहित्य के विविध गद्य व पद्य रूपों के माध्यम से अपने युग का बोध होगा।
- साहित्य की विभिन्न विधाओं में रचनात्मक लेखन व संप्रेषण की क्षमता विकसित होगी।
- साहित्य संसार व वास्तविक संसार के यथार्थ के प्रति आलोचनात्मक समझ विकसित होगी और संवेदनशील व्यक्तित्व का विकास होगा।
- साहित्य के सौंदर्य, कला तथा वैचारिक मूल्यों के प्रति विवेक का निर्माण होगा।
- व्यक्तित्व विकास व जीवनयापन के लिए भाषायी कौशल, कंप्यूटर, अनुवाद, पत्रकारिता, जनसंचार, रंगमंच, चलचित्र आदि के बारे में सैद्धांतिक व व्यावहारिक ज्ञान होगा।
- भारतीय समाज और सांस्कृतिक जीवन के विभिन्न पक्षों में अन्तर्निहित एकता के तत्त्वों का परिचय व पहचान होगी। देश व समाज की एकता-अंखडता की भावना विकसित होगी।
- उद्यमशीलता की अंतर्दृष्टि व भविष्यदृष्टि का विकास होगा।
- संदर्भ आधारित ग्रहण क्षमता के माध्यम से काल-परिस्थिति सापेक्ष ठोस विश्लेषणात्मक प्रवृत्ति का विकास होगा।

सेमेस्टर -1

BH-HIN-CC-101-हिंदी साहित्य का इतिहास (रीतिकाल तक)

क्रेडिट - 6 **कुल अंक-100**

समय-3 घंटे, **परीक्षा अंक - 80, आंतरिक मूल्यांकन - 20**

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

हिंदी साहित्य के इतिहास से परिचय।

पाठ्यक्रम के अपेक्षित परिणाम

- हिंदी भाषा के विकास के सोपानों की पहचान।
- हिंदी साहित्य की विभिन्न धाराओं व साहित्यिक परपंराओं से परिचय। भक्तिकालीन विभिन्न धाराओं की वैचारिक पृष्ठभूमि की समझ।
- हिंदी साहित्य के विभिन्न पड़ावों व बदलाव के बिंदुओं की पहचान व भारतीय इतिहास के साथ उसकी तर्कसंगति का अध्ययन।
- हिंदी साहित्यकारों की रचना क्षमता व अभिव्यक्ति की विशिष्टताओं की पहचान।

परीक्षा संबधी निर्देश - पाठ्यक्रम चार इकाइयों में विभक्त है। प्रश्न पत्र तीन खंडों में विभक्त होगा।

- **समीक्षात्मक प्रश्न -** निर्धारित पाठ्यक्रम की चारों इकाइयों में से आंतरिक विकल्प सहित एक-एक समीक्षात्मक प्रश्न पूछा जाएगा। विद्यार्थी को प्रत्येक का उत्तर देना होगा। प्रत्येक के लिए 10 अंक निर्धारित हैं।
- **लघूत्तरी प्रश्न -** निर्धारित समस्त पाठ्यक्रम में से दस लघूत्तरी प्रश्न पूछे जाएंगे। विद्यार्थी को इनमें से छः के (लगभग 150 शब्दों में) उत्तर देने होंगे। प्रत्येक के लिए 5 अंक निर्धारित हैं।
- **वस्तुनिष्ठ प्रश्न -** निर्धारित समस्त पाठ्यक्रम में 10 वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जाएंगें। विद्यार्थी को प्रत्येक का उत्तर देना होगा। इसमें कोई विकल्प नहीं होगा। प्रत्येक के लिए 1 अंक निर्धारित हैं।

पाठ्य विषय

इकाई 1

- इतिहास लेखन और साहित्येतिहास लेखन
- हिंदी साहित्य इतिहास लेखन की परंपरा
- हिंदी साहित्य का काल विभाजन एवं नामकरण,
- आदिकाल की विशेषताएं
- आदिकालीन सिद्ध काव्यधारा की काव्यगत विशेषताएं

- आदिकालीन नाथ काव्यधारा की काव्यगत विशेषताएं
- आदिकालीन प्रमुख रासो काव्यधारा की काव्यगत विशेषताएं
- आदिकालीन लौकिक काव्य और प्रमुख कवि (विद्यापति, अमीर खुसरो)

इकाई 2

- भक्ति आन्दोलन: सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि,
- संतकाव्य की वैचारिक पृष्भूमि
- संत काव्यधारा की काव्यगत विशेषताएं और प्रमुख कवि
- सूफीकाव्य की वैचारिक पृष्ठभूमि
- सूफी काव्यधारा की काव्यगत विशेषताएं और प्रमुख कवि

इकाई 3

- कृष्णकाव्य की वैचारिक पृष्ठभूमि
- कृष्ण काव्यधारा की काव्यगत विशेषताएं और प्रमुख कवि
- रामकाव्य की वैचारिक पृष्ठभूमि
- राम कव्यधारा की काव्यगत विशेषताएं और प्रमुख कवि

इकाई 4

- रीतिकाल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि,
- रीतिबद्ध काव्यधारा की काव्यगत विशेषताएं
- रीतिसिद्ध काव्यधारा की काव्यगत विशेषताएं
- रीतिमुक्त काव्यधारा की काव्यगत विशेषताएं

सहायक पुस्तकें

- हिंदी भाषा का इतिहास - धीरेंद्र वर्मा
- हिन्दी साहित्य का इतिहास- रामचंद्र शुक्ल
- हिन्दी साहित्य का आदिकाल- हजारी प्रसाद द्विवेदी
- हिन्दी साहित्य की भूमिका- हजारी प्रसाद द्विवेदी
- हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास - रामस्वरूप चतुर्वेदी
- हिंदी साहित्य का इतिहास - (सं.) डा. नगेंद्र
- हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास - बच्चन सिंह
- हिंदी साहित्य का इतिहास - लालचंद गुप्त मंगल
- हिंदी साहित्यः इतिहास के आइने में - डॉ. सुभाष चंद्र

BH-HIN-CC-102-हिंदी साहित्य का इतिहास (आधुनिक काल)

क्रेडिट - 6 **कुल अंक-100**

समय-3 घंटे, **परीक्षा अंक - 80, आंतरिक मूल्यांकन - 20**

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

हिंदी साहित्य के इतिहास से परिचय।

पाठ्यक्रम के अपेक्षित परिणाम

- आधुनिक काल की वैचारिक पृष्ठभूमि की समझ।
- हिंदी साहित्य के विभिन्न पड़ावों व बदलाव के बिंदुओं की पहचान व भारतीय इतिहास के साथ उसकी तर्कसंगति का अध्ययन।
- भारतीय पुनर्जागरण के मुद्दे व अंतर्विरोधों की पहचान।
- भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन व साहित्य के संबंधों की समझ

परीक्षा संबधी निर्देश - पाठ्यक्रम चार इकाइयों में विभक्त है। प्रश्न पत्र तीन खंडों में विभक्त होगा।

- **समीक्षात्मक प्रश्न -** निर्धारित पाठ्यक्रम की चारों इकाइयों में से आंतरिक विकल्प सहित एक-एक समीक्षात्मक प्रश्न पूछा जाएगा। विद्यार्थी को प्रत्येक का उत्तर देना होगा। प्रत्येक के लिए 10 अंक निर्धारित हैं।
- **लघूत्तरी प्रश्न -** निर्धारित समस्त पाठ्यक्रम में से दस लघूत्तरी प्रश्न पूछे जाएंगे। विद्यार्थी को इनमें से छः के (लगभग 150 शब्दों में) उत्तर देने होंगे। प्रत्येक के लिए 5 अंक निर्धारित हैं।
- **वस्तुनिष्ठ प्रश्न -** निर्धारित समस्त पाठ्यक्रम में 10 वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जाएंगें। विद्यार्थी को प्रत्येक का उत्तर देना होगा। इसमें कोई विकल्प नहीं होगा। प्रत्येक के लिए 1 अंक निर्धारित हैं।

पाठ्य विषय

इकाई 1

- आधुनिक काल की सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि
- हिन्दी नवजागरण
- भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन
- भारतेन्दु युगीन साहित्य की विशेषताएँ,
- महावीर प्रसाद द्विवेदी और उनका युग

इकाई 2

- छायावादः प्रवृतियां और प्रमुख कवि

- प्रगतिवादः प्रवृतियां और प्रमुख कवि
- प्रयोगवादः प्रवृतियां और प्रमुख कवि
- नई कविताः प्रवृतियां और प्रमुख कवि
- समकालीन कविताः प्रवृतियां और प्रमुख कवि

इकाई 3

- हिंदी नाटकः उद्भव और विकास
- हिंदी निबंधः उद्भव और विकास
- हिंदी उपन्यासः उद्भव और विकास
- हिंदी कहानीः उद्भव और विकास
- हिंदी पत्रकारिताः उद्भव और विकास

इकाई 4

- हिंदी रेखाचित्रः उद्भव और विकास
- संस्मरणः उद्भव और विकास
- हिंदी आत्मकथाः उद्भव और विकास
- हिंदी जीवनीः उद्भव और विकास
- अस्मितामूलक विमर्श (दलित, स्त्री व आदिवासी)

सहायक पुस्तकें

- हिन्दी साहित्य का इतिहास- रामचंद्र शुक्ल
- आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियां - नामवर सिंह
- हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास - रामस्वरूप चतुर्वेदी
- हिंदी साहित्य का इतिहास - (सं.) डा. नगेंद्र
- हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास - बच्चन सिंह
- हिंदी साहित्य का इतिहास - लालचंद गुप्त मंगल
- हिंदी साहित्यः इतिहास के आइने में - डा. सुभाष चंद्र

BH-HIN-AECC-103-हिंदी व्याकरण और संप्रेषण

क्रेडिट - 2 **कुल अंक-50**

समय-1.30 घंटे, **परीक्षा अंक - 40, आंतरिक मूल्यांकन - 10**

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

हिंदी व्याकरण तथा उसके अनुप्रयोग के लिए।

पाठ्यक्रम के अपेक्षित परिणाम

- हिंदी भाषा का सही उच्चारण कर पाएगा।
- हिंदी व्याकरण के नियमों का ज्ञान।
- भाषा का मानक व शुद्ध प्रयोग करने में सक्षम।

परीक्षा संबधी निर्देश - प्रश्न पत्र तीन खंडों में विभक्त होगा।

- **समीक्षात्मक प्रश्न** - निर्धारित पाठ्यक्रम में से 4 समीक्षात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे। विद्यार्थी को 2 का उत्तर देना होगा। प्रत्येक के लिए 8 अंक निर्धारित हैं।
- **लघूत्तरी प्रश्न -** निर्धारित समस्त पाठ्यक्रम में से 4 लघूत्तरी प्रश्न पूछे जाएंगे। विद्यार्थी को इनमें से 2 के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक के लिए 4 अंक निर्धारित हैं।
- **वस्तुनिष्ठ प्रश्न -** निर्धारित समस्त पाठ्यक्रम में 8 वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जाएंगें। विद्यार्थी को प्रत्येक का उत्तर देना होगा। इसमें कोई विकल्प नहीं होगा। प्रत्येक के लिए 1 अंक निर्धारित हैं।

पाठ्य विषयः

- व्याकरण का स्वरूप और महत्व
- व्याकरण और भाषा का संबंध
- देवनागरी लिपि का मानकीकरण
- हिंदी की वर्ण-व्यवस्था: स्वर एवं व्यंजन। स्वर के प्रकार - ह्रस्व, दीर्घ तथा संयुक्त।
- हिंदी भाषा शब्द भंडार - तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी
- शब्द निर्माण - उपसर्ग, प्रत्यय,
- पर्यायवाची शब्द, विलोम शब्द,
- संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया
- मुहावरे, लोकोक्तियां
- हिंदी वाक्य रचना, वाक्य और उपवाक्य, वाक्य के भेद
- शब्द शुद्धि और वाक्य शुद्धि

सहायक पुस्तकें

- हिन्दी व्याकरण - कामता प्रसाद गुरु
- हिन्दी शब्दानुशासन - किशोरीदास वाजपेयी
- हिन्दी भाषा की संरचना - भोलानाथ तिवारी
- परिष्कृत हिन्दी व्याकरण - बदरी नाथ कपूर
- सामान्य हिन्दी - हरदेव बाहरी
- सामान्य हिन्दी - डॉ. पृथ्वी नाथ पाण्डेय

BH-HIN-GE-104-कला और साहित्य

क्रेडिट - 6 **कुल अंक-100**

समय-3 घंटे, **परीक्षा अंक - 80, आंतरिक मूल्यांकन - 20**

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

कला और साहित्य से परिचय।

पाठ्यक्रम के अपेक्षित परिणाम

- साहित्य और अन्य कलाओं के अंतसंबंधों का बोध।
- साहित्य और कला के विभिन्न आयामों की आलोचनात्मक समझ।
- साहित्य व कला के सैद्धांतिक व व्यावहारिक पक्षों की समझ का विस्तार।

परीक्षा संबधी निर्देश - प्रश्न पत्र तीन खंडों में विभक्त होगा।

- **समीक्षात्मक प्रश्न** - निर्धारित पाठ्यक्रम में से 7 समीक्षात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे। विद्यार्थी को 4 का उत्तर देना होगा। प्रत्येक के लिए 10 अंक निर्धारित हैं।
- **लघूत्तरी प्रश्न -** निर्धारित समस्त पाठ्यक्रम में से 10 लघूत्तरी प्रश्न पूछे जाएंगे। विद्यार्थी को इनमें से 6 के उत्तर (लगभग 150 शब्दों में) देने होंगे। प्रत्येक के लिए 5 अंक निर्धारित हैं।
- **वस्तुनिष्ठ प्रश्न -** निर्धारित समस्त पाठ्यक्रम में 10 वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जाएंगें। विद्यार्थी को प्रत्येक का उत्तर देना होगा। इसमें कोई विकल्प नहीं होगा। प्रत्येक के लिए 1 अंक निर्धारित हैं।

पाठ्य विषयः

- कला और साहित्य का अंतस्संबंध
- कला और समाज का अंतस्संबंध
- कला में दीर्घजीविता के तत्व और उपकरण
- भारतीय कला का विकास
- भारतीय कला का सौंदर्यशास्त्रीय महत्व
- कला और हिन्दी साहित्य के सम्बंध की परपंरा
- लोक-कला और साहित्य
- साहित्य के मूल्यांकन में कला का महत्व
- भारतीय नाटय कला
- साहित्य, कला और विचारधारा
- कला कला के लिए
- कला जीवन के लिए
- वर्तमान में साहित्य और कला की प्रासंगिकता
- साहित्य, कला और बाजार

सहायक पुस्तकें

- साहित्य और कला - भगवतशरण उपाध्याय
- साहित्य के सिद्धांत और रूप - भगवतीचरण वर्मा
- साहित्य-सहचर - हजारी प्रसाद द्विवेदी
- साहित्य और कला - कार्ल मार्क्स और एंगेल्स
- साहित्य का समाजशास्त्र - मैनेजर पांडेय
- साहित्य और इतिहास दृष्टि - मैनेजर पांडेय
- कला साहित्य और संस्कृति - लू शुन, वाणी प्रकाशन, 2014
- कला और संस्कृति - रजनी
- कार्ल मार्क्स : कला और साहित्य चिन्तन - नामवर सिंह
- साहित्य और समाज - रामधारी सिंह दिनकर
- आधुनिक साहित्य की प्रवृतियां - नामवर सिंह

सेमेस्टर -II

BH-HIN-CC-201-आदिकालीन एवं मध्यकालीन हिंदी कविता

क्रेडिट - 6 **कुल अंक-100**

समय-3 घंटे, **परीक्षा अंक - 80, आंतरिक मूल्यांकन - 20**

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

आदिकालीन व मध्यकालीन कविता से परिचित करवाने के लिए।

पाठ्यक्रम के अपेक्षित परिणाम

- आदिकालीन व मध्यकालीन कविता का बोध होगा।
- सगुण, निर्गुण, रीतिकाल के विभिन्न कवियों की काव्य विशिष्टता की पहचान कर पायेंगे।
- मध्यकालीन भाषा व अभिव्यक्ति के विभिन्न रूपों की पहचान होगी।
- हिंदी काव्य परंपरा की जानकारी मिलेगी।

परीक्षा संबधी निर्देश - प्रश्न पत्र पांच खंडों में विभक्त होगा।

- **व्याख्या खंड** - पाठ्यक्रम में निर्धारित रचनाओं से दो पाठांश दिए जायेंगे। विद्यार्थी को किसी एक की संदर्भ सहित व्याख्या करनी होगी। इसके लिए 10 अंक निर्धारित हैं।
- **पाठ-बोध खंड** - पाठ्यक्रम में निर्धारित रचनाओं से एक पाठांश तथा तत्संबंधी 5 प्रश्न दिए जायेंगे। विद्यार्थी को उस पाठांश के आधार पर उत्तर देने होंगे। इसके लिए 10 अंक निर्धारित हैं।
- **समीक्षात्मक खंड** - पाठ्यक्रम में निर्धारित रचनाकारों के साहित्यिक परिचय, उनके साहित्य की विषयवस्तु, मूल संवेदना व रचना-सौष्ठव संबंधी पांच समीक्षात्मक प्रश्न पूछे जायेंगें। विद्यार्थी को किंही तीन का उत्तर देना होगा। प्रत्येक के लिए 10 अंक निर्धारित हैं।
- **लघूत्तरी खंड** - निर्धारित पाठ्यक्रम में से सात लघूत्तरी प्रश्न पूछे जाएंगे। विद्यार्थी को इनमें से चार के उत्तर (लगभग 150 शब्दों में) देने होंगे। प्रत्येक के लिए 5 अंक निर्धारित हैं।
- **वस्तुनिष्ठ खंड** - निर्धारित समस्त पाठ्यक्रम में से 10 वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जाएंगें। विद्यार्थी को प्रत्येक का उत्तर देना होगा। इसमें कोई विकल्प नहीं होगा। इसके लिए 10 अंक निर्धारित हैं।

निर्धारित कवि व उनका काव्य

1. अमीर खुसरो
2. कबीरदास
3. रैदास
4. सूरदास
5. तुलसीदास

6. रहीम
7. मीराबाई
8. बिहारी
9. घनानंद
10. चिंतमणि
11. गरीबदास

सहायक पुस्तकें

- हिन्दी साहित्य का इतिहास- रामचन्द्र शुक्ल
- मध्यकालीन बोध और साहित्यः- हजारी प्रसाद द्विवेदी
- तुलसीदास और उनका युग- डॉ. रामविलास शर्मा
- कबीर एक नई दृष्टि- रघुवंश
- कबीर के आलोचक- डॉ. धर्मवीर
- कबीर- गोविन्द त्रिगुणायत
- कबीर- हजारी प्रसाद द्विवेदी
- मीराबाई- परशुराम चतुर्वेदी

BH-HIN-CC-202-आधुनिक हिंदी कविता (छायावाद तक)

क्रेडिट - 6 **कुल अंक-100**

समय-3 घंटे, **परीक्षा अंक - 80, आंतरिक मूल्यांकन - 20**

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

आधुनिक कविता (छायावाद तक) से परिचय।

पाठ्यक्रम के अपेक्षित परिणाम

- आधुनिक काल की पृष्टभूमि से परिचय।
- आधुनिक काल के कवियों की काव्य क्षमता का बोध।
- नवजागरण व राष्ट्र के निर्माण की प्रक्रिया का ज्ञान।
- आधुनिक हिंदी कविता के प्रमुख हस्ताक्षरों की कविता का आलोचनात्मक बोध।

परीक्षा संबधी निर्देश - प्रश्न पत्र पांच खंडों में विभक्त होगा।

- **व्याख्या खंड** - पाठ्यक्रम में निर्धारित रचनाओं से दो पाठांश दिए जायेंगे। विद्यार्थी को किसी एक की संदर्भ सहित व्याख्या करनी होगी। इसके लिए 10 अंक निर्धारित हैं।
- **पाठ-बोध खंड -** पाठ्यक्रम में निर्धारित रचनाओं से एक पाठांश तथा तत्संबंधी 5 प्रश्न दिए जायेंगे। विद्यार्थी को उस पाठांश के आधार पर उत्तर देने होंगे। इसके लिए 10 अंक निर्धारित हैं।
- **समीक्षात्मक खंड -** पाठ्यक्रम में निर्धारित रचनाकारों के साहित्यिक परिचय, उनके साहित्य की विषयवस्तु, मूल संवेदना व रचना-सौष्ठव संबंधी पांच समीक्षात्मक प्रश्न पूछे जायेंगें। विद्यार्थी को किंही तीन का उत्तर देना होगा। प्रत्येक के लिए 10 अंक निर्धारित हैं।
- **लघूत्तरी खंड -** निर्धारित पाठ्यक्रम में से सात लघूत्तरी प्रश्न पूछे जाएंगे। विद्यार्थी को इनमें से चार के उत्तर (लगभग 150 शब्दों में) देने होंगे। प्रत्येक के लिए 5 अंक निर्धारित हैं।
- **वस्तुनिष्ठ खंड -** निर्धारित समस्त पाठ्यक्रम में से 10 वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जाएंगें। विद्यार्थी को प्रत्येक का उत्तर देना होगा। इसमें कोई विकल्प नहीं होगा। इसके लिए 10 अंक निर्धारित हैं।

निर्धारित कवि व उनकी कविताएं

1. भारतेंदु
2. अयोध्यासिंह उपाध्याय ‘हरिऔध’
3. मैथिलीशरण गुप्त
4. जयशंकर प्रसाद
5. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला
6. सुमित्रानंदन पंत
7. महादेवी वर्मा
8. रामधारी सिंह दिनकर

सहायक पुस्तकें

- आधुनिक हिन्दी कविता का इतिहास- डॉ. नन्दकिशोर नवल
- छायावाद- नामवर सिंह
- प्रसाद का काव्य- डॉ. प्रेम शंकर
- महीमसी महादेवी- गंगा प्रसाद पांडेय
- निराला की साहित्य साधना(दूसरा भाग)- रामविलास शर्मा
- साकेतः एक अध्ययन- डॉ. नगेन्द्र
- कामायनीः एक पुनर्विचार- मुक्तिबोध
- कामायनी के अध्ययन की समस्याएं- डॉ. नगेन्द्र

BH-HIN-AECC-203-हिंदी भाषा और संप्रेषण कौशल

क्रेडिट - 2 **कुल अंक-50**

समय-1.30 घंटे, **परीक्षा अंक - 40, आंतरिक मूल्यांकन - 10**

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

संप्रेषण की विधियों और सिद्धांतों से परिचय के लिए। हिंदी भाषा में अपेक्षित संप्रेषण के लिए।

पाठ्यक्रम के अपेक्षित परिणाम

- हिंदी भाषा में अपेक्षित संप्रेषण कर पाएगा।
- संप्रेषण की विधियों को सीखकर हिंदी भाषा में मौखिक व लिखित रूप में अपेक्षित व प्रभावी संप्रेषण करने में सक्षम होगा।

परीक्षा संबधी निर्देश - प्रश्न पत्र तीन खंडों में विभक्त होगा।

- **समीक्षात्मक प्रश्न** - निर्धारित पाठ्यक्रम में से 4 समीक्षात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे। विद्यार्थी को 2 का उत्तर देना होगा। प्रत्येक के लिए 8 अंक निर्धारित हैं।
- **लघूत्तरी प्रश्न** - निर्धारित समस्त पाठ्यक्रम में से 4 लघूत्तरी प्रश्न पूछे जाएंगे। विद्यार्थी को इनमें से 2 के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक के लिए 4 अंक निर्धारित हैं।
- **वस्तुनिष्ठ प्रश्न** - निर्धारित समस्त पाठ्यक्रम में 8 वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जाएंगें। विद्यार्थी को प्रत्येक का उत्तर देना होगा। इसमें कोई विकल्प नहीं होगा। प्रत्येक के लिए 8 अंक निर्धारित हैं।

पाठ्य विषयः

- भाषा का स्वरुप एवं विशेषताएं
- हिंदी भाषा का विकास
- हिंदी भाषा के विविध रूप - संपर्क भाषा, राजभाषा, राष्ट्रभाषा
- हिंदी की संविधानिक स्थिति
- देवनागरी लिपि का मानकीकरण
- संप्रेषण की अवधारणा एवं महत्व
- संप्रेषण के प्रकार - मौखिक और लिखित
- संप्रेषण में बाधाएं और चुनौतियां
- संप्रेषण के विविध रूप - साक्षात्कार, भाषण, संवाद, सामूहिक चर्चा आदि।
- संप्रेषण के माध्यम
- जनसंचार के लिए लेखन

सहायक पुस्तकें

- हिन्दी भाषा का उद्भव और विकास - उदयनारायण तिवारी, भारती भंडार
- हिन्दी भाषा और लिपि का ऐतिहासिक विकास - सत्यनारायण तिवारी
- राष्ट्रभाषा हिन्दी : समस्याएँ और समाधान - देवेन्द्रनाथ शर्मा
- प्रयोजनमूलक हिन्दी - दंगल झाल्टे, वाणी प्रकाशन
- प्रयोजनमूलक हिन्दी - प्रो. रमेश जैन, नेशनल पब्लिशिंग हाउस
- राजभाषा सहायिका - अवधेश मोहन गुप्त, प्रभात प्रकाशन
- जनसंचारिकी सिद्धांत और अनुप्रयोग - प्रो. राम लखन मीना, कल्पना प्रकाशन
- जनमाध्यमों का मायाजाल - नोम चॉम्स्की
- जनसंपर्क सिद्धांत और व्यवहार - अर्जुन तिवारी

BH-HIN-GE-204-हिंदी की सांस्कृतिक पत्रकारिता

क्रेडिट - 6 **कुल अंक-100**

समय-3 घंटे, **परीक्षा अंक - 80, आंतरिक मूल्यांकन - 20**

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

हिंदी की सांस्कृतिक पत्रकारिता से परिचय

पाठ्यक्रम के अपेक्षित परिणाम

- सांस्कृतिक पत्रकारिता के सैद्धांतिक व व्यावहारिक पक्षों का ज्ञान।
- सांस्कृतिक पत्रकारिता में दक्षता।
- सांस्कृतिक पत्रकारिता की आलोचनात्मक समझ का विकास।
- सांस्कृतिक चेतना का विकास

परीक्षा संबधी निर्देश - प्रश्न पत्र तीन खंडों में विभक्त होगा।

- **समीक्षात्मक प्रश्न** - निर्धारित पाठ्यक्रम में से 7 समीक्षात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे। विद्यार्थी को 4 का उत्तर देना होगा। प्रत्येक के लिए 10 अंक निर्धारित हैं।
- **लघूत्तरी प्रश्न -** निर्धारित समस्त पाठ्यक्रम में से 10 लघूत्तरी प्रश्न पूछे जाएंगे। विद्यार्थी को इनमें से 6 के उत्तर (लगभग 150 शब्दों में) देने होंगे। प्रत्येक के लिए 5 अंक निर्धारित हैं।
- **वस्तुनिष्ठ प्रश्न** - निर्धारित समस्त पाठ्यक्रम में 10 वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जाएंगें। विद्यार्थी को प्रत्येक का उत्तर देना होगा। इसमें कोई विकल्प नहीं होगा। प्रत्येक के लिए 1 अंक निर्धारित हैं।

पाठ्य विषयः

- सांस्कृतिक पत्रकारिता: अवधारणा, अर्थ और महत्व। परम्परागत, आधुनिक और उत्तर आधुनिक समाज। संस्कृति, लोकसंस्कृति, लोकप्रिय संस्कृति, अपसंस्कृति। बाजार, संस्कृति और संचार माध्यम।
- सांस्कृतिक संवाद: अर्थ, भेद और विशेषताएँ। सांस्कृतिक संवाददाता की योग्यताएँ: आस्वादन, अन्वीक्षण, कल्पनाशीलता आदि। सांस्कृतिक संवाद के क्षेत्रों का परिचय - मंचकला, पर्यटन, पुरातत्व संग्रहालय आदि।
- मंचकला और पत्रकारिता: रंगमंच; संगीत-गायन, वादन (ताल वाद्य, तंत्र वाद्य) और नृत्य के कार्यक्रम संवाद लेखन और समीक्षा। चित्रकला (पेंटिंग, ग्राफिक, टेक् सटाल डिजाइन), शिल्पकला, स्थापत्य कला के कार्यक्रम: संवाद लेखन और समीक्षा।
- पर्यटन पत्रकारिता - प्रमुख धर्मिक स्थलों, स्मारकीय और प्राकृतिक सम्पदाओं का परिचय: संवाद लेखन और समीक्षा। छायाचित्र (फोटाग्राफी) और चित्र पत्रकारिताः जनसंचार माध्यम के रूप में छायाचित्र, छायाचित्र लेने की तरीके, उपकरण और प्रयोग की विधि।
- चित्र पत्रकारिता: सिद्धान्त और व्यवहार, चित्र सम्पादन, सचित्र रूपक (फीचर), प्रदर्शनी।

चलचित्र (छायाछवि/फिल्म) पत्रकारिताः संचार माध्यम के रूप में फिल्म और विडियो, लघुफिल्म, वृत्तचित्र, धारावाहिक: परिचय और विकास; फिल्म पृष्ठ का आकल्पन और अभिविन्यास।

सहायक पुस्तकें

- पत्रकारिता का समाजशास्त्र - रविभूषण पांडेय
- मास कम्युनिकेशन इन इंडिया - कुमार केवल
- जनसंपर्क सिद्धान्त और व्यवहार - अर्जुन तिवारी
- समाचार पत्र व्यवसाय एवं प्रेस कानून - संजीव भानावत
- आधुनिक विज्ञापन - प्रेमचंद पातंजलि
- विज्ञापन व्यवसाय एवं कला - रामचन्द्र तिवारी
- जनसंपर्क प्रबन्धन - कुमुद शर्मा
- सूचना प्रौद्योगिकी और समाचार पत्र - रवीन्द्र शुक्ल, राजकमल प्रकाशन

सेमेस्टर -III

BH-HIN-CC-301-छायावादोत्तर हिंदी कविता

क्रेडिट - 6 **कुल अंक-100**

समय-3 घंटे, **परीक्षा अंक - 80, आंतरिक मूल्यांकन - 20**

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

छायावादोत्तर हिंदी कविता से परिचय

पाठ्यक्रम के अपेक्षित परिणाम

- छायावाद के बाद की हिंदी कविता के विविध स्वरों का बोध होगा।
- स्वतंत्रता के बाद के समाज का यथार्थ तथा उसके प्रति लेखकों की सृजनात्मक प्रतिक्रिया ज्ञात होगी।
- समकालीन कविता की काव्य-शैलियों का परिचय प्राप्त होगा।

परीक्षा संबधी निर्देश - प्रश्न पत्र पांच खंडों में विभक्त होगा।

- **व्याख्या खंड** - पाठ्यक्रम में निर्धारित रचनाओं से दो पाठांश दिए जायेंगे। विद्यार्थी को किसी एक की संदर्भ सहित व्याख्या करनी होगी। इसके लिए 10 अंक निर्धारित हैं।
- **पाठ-बोध खंड -** पाठ्यक्रम में निर्धारित रचनाओं से एक पाठांश तथा तत्संबंधी 5 प्रश्न दिए जायेंगे। विद्यार्थी को उस पाठांश के आधार पर उत्तर देने होंगे। इसके लिए 10 अंक निर्धारित हैं।
- **समीक्षात्मक खंड -** पाठ्यक्रम में निर्धारित रचनाकारों के साहित्यिक परिचय, उनके साहित्य की विषयवस्तु, मूल संवेदना व रचना-सौष्ठव संबंधी पांच समीक्षात्मक प्रश्न पूछे जायेंगें। विद्यार्थी को किंही तीन का उत्तर देना होगा। प्रत्येक के लिए 10 अंक निर्धारित हैं।
- **लघूत्तरी खंड -** निर्धारित पाठ्यक्रम में से सात लघूत्तरी प्रश्न पूछे जाएंगे। विद्यार्थी को इनमें से चार के उत्तर (लगभग 150 शब्दों में) देने होंगे। प्रत्येक के लिए 5 अंक निर्धारित हैं।
- **वस्तुनिष्ठ खंड -** निर्धारित समस्त पाठ्यक्रम में से 10 वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जाएंगें। विद्यार्थी को प्रत्येक का उत्तर देना होगा। इसमें कोई विकल्प नहीं होगा। इसके लिए 10 अंक निर्धारित हैं।

निर्धारित कवि व उनकी कविताएं

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' - कलगी बाजरे की, यह दीप अकेला

गजानन माधव मुक्तिबोध - भूल गलती, जन जन का चेहरा एक

नागार्जुन - अकाल और उसके बाद, कालिदास

शमशेर बहादुर सिंह - सूना सूना पथ है, उदास झरना, वह सलोना जिस्म

भवानी प्रसाद मिश्र - कहीं नहीं बचे, गीत फरोश

कुँवर नारायण - नचिकेता, कविता

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - देश कागज पर बना नक्शा नहीं होता, हम ले चलेंगे

केदारनाथ सिंह - रचना की आधी रात, फर्क नहीं पड़ता

सहायक पुस्तकें

- मुक्तिबोधः प्रतिनिधि कविताएँ राजकमल प्रकाशन
- केदारनाथ सिहिः प्रतिनिधि कविताएँ राजकमल प्रकाशन
- सर्वेश्वर दयाल सक्सेना- कृष्णदत्त पालीवाल
- कुँवर नारायणः उपस्थिति- सं. यतीन्द्र मिश्र
- साहित्य और समकालीनता - राजेश जोशी
- आधुनिक साहित्य - नंददुलारे वाजपेयी
- निराला - राम विलास शर्मा
- आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियां - नामवर सिंह

BH-HIN-CC-302-भारतीय काव्यशास्त्र

क्रेडिट - 6 **कुल अंक-100**

समय-3 घंटे, **परीक्षा अंक - 80, आंतरिक मूल्यांकन - 20**

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

भारतीय काव्यशास्त्र से परिचय।

पाठ्यक्रम के अपेक्षित परिणाम

- भारतीय साहित्य चिंतन के विभिन्न सिद्धातों का ज्ञान।
- भारतीय व पाश्चात्य साहित्य चिंतन में तुलनात्मक समझ की प्रेरणा।
- भारतीय सौंदर्यबोध के सैद्धांतिक व व्यावहारिक पक्षों का ज्ञान
- साहित्य समीक्षा की समझ में अभिवृद्धि

परीक्षा संबधी निर्देश - पाठ्यक्रम चार इकाइयों में विभक्त है। प्रश्न पत्र तीन खंडों में विभक्त होगा।

- **समीक्षात्मक प्रश्न -** निर्धारित पाठ्यक्रम में से 7 समीक्षात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे। विद्यार्थी को 4 का उत्तर देना होगा। प्रत्येक के लिए 10 अंक निर्धारित हैं।
- **लघूत्तरी प्रश्न -** निर्धारित समस्त पाठ्यक्रम में से दस लघूत्तरी प्रश्न पूछे जाएंगे। विद्यार्थी को इनमें से छः के (लगभग 150 शब्दों में) उत्तर देने होंगे। प्रत्येक के लिए 5 अंक निर्धारित हैं।
- **वस्तुनिष्ठ प्रश्न -** निर्धारित समस्त पाठ्यक्रम में 10 वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जाएंगें। विद्यार्थी को प्रत्येक का उत्तर देना होगा। इसमें कोई विकल्प नहीं होगा। प्रत्येक के लिए 1 अंक निर्धारित हैं।

पाठ्य विषय

- काव्य लक्षण, काव्य हेतु एवं काव्य प्रयोजन।
- रस सिद्धान्त - रस की अवधारणा, रस निष्पत्ति और साधारणीकरण।
- ध्वनि सिद्धान्त - ध्वनि की अवधारणा, ध्वनि का वर्गीकरण।
- अलंकार सिद्धान्त - अलंकार की अवधारणा, अलंकार और अलंकार्य, अलंकारों का वर्गीकरण
- रीति सिद्धान्त - रीति की अवधारणा, रीति एवं गुण, रीति का वर्गीकरण।
- वक्रोक्ति सिद्धान्त - वक्रोक्ति की अवधारणा, वक्रोक्ति एवं अभिव्यंजनावाद।
- औचित्य सिद्धांत - प्रमुख स्थापनाएं
- हिन्दी काव्यशास्त्र - रीतिकालीन आचार्यों का योगदान,
- आचार्य रामचंद्र शुक्ल की साहित्य संबंधी स्थापनाएं,
- प्रेमचंद की साहित्य संबंधी स्थापनाएं
- मुक्तिबोध की साहित्य संबंधी स्थापनाएं
- रवींद्रनाथ टैगोर की साहित्य संबंधी स्थापनाएं
- हाली की साहित्य संबंधी स्थापनाएं

सन्दर्भ पुस्तकें

- भारतीय काव्यशास्त्र- बलदेव उपाध्याय
- भारतीय काव्यशास्त्र- संपा. उदयभानु सिंह
- काव्य तत्त्व विमर्श- राममूर्ति त्रिपाठी
- भारतीय काव्यशास्त्र- सत्यदेव चौधरी
- काव्यांग दर्पण- डॉ. विजयबहादुर अवस्थी
- रस मीमांसा- रामचंद्र शुक्ल
- रस सिद्धांत- नगेन्द्र
- रस-सिद्धांतः स्वरूप और विश्लेषण- आनंदप्रकाश दीक्षित
- भारतीय काव्यशास्त्र की परंपरा- नगेन्द्र

BH-HIN-CC-303-पाश्चात्य काव्यशास्त्र

क्रेडिट - 6 **कुल अंक-100**

समय-3 घंटे, **परीक्षा अंक - 80, आंतरिक मूल्यांकन - 20**

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

पाश्चात्य काव्यशास्त्र से परिचय।

पाठ्यक्रम के अपेक्षित परिणाम

- पाश्चात्य साहित्य चिंतन के विभिन्न सिद्धातों का ज्ञान।
- भारतीय व पाश्चात्य साहित्य चिंतन में तुलनात्मक समझ की प्रेरणा।
- पाश्चात्य समीक्षा पद्धतियों की सैद्धांतिक व व्यावहारिक ज्ञान

परीक्षा संबधी निर्देश - प्रश्न पत्र तीन खंडों में विभक्त होगा।

- **समीक्षात्मक प्रश्न -** निर्धारित पाठ्यक्रम में से 7 समीक्षात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे। विद्यार्थी को 4 का उत्तर देना होगा। प्रत्येक के लिए 10 अंक निर्धारित हैं।
- **लघूत्तरी प्रश्न -** निर्धारित समस्त पाठ्यक्रम में से दस लघूत्तरी प्रश्न पूछे जाएंगे। विद्यार्थी को इनमें से छः के (लगभग 150 शब्दों में) उत्तर देने होंगे। प्रत्येक के लिए 5 अंक निर्धारित हैं।
- **वस्तुनिष्ठ प्रश्न -** निर्धारित समस्त पाठ्यक्रम में 10 वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जाएंगें। विद्यार्थी को प्रत्येक का उत्तर देना होगा। इसमें कोई विकल्प नहीं होगा। प्रत्येक के लिए 1 अंक निर्धारित हैं।

पाठ्य विषय

- प्लेटो - काव्य संबंधी मान्यताएँ,
- अरस्तू - अनुकृति एवं विरेचन,
- लोंजाइनस - काव्य में उदात्त की अवधारणा
- वडर्सवर्थ - काव्य भाषा का सिद्धान्त,
- कॉलरिज - कल्पना और फैन्टेसी।
- क्रोचे - अभिव्यंजनावाद।
- टी.एस. एलियट - परम्परा और वैयक्तिक प्रतिभा, निर्वैयक्तिकता का सिद्धान्त
- मैथ्यू ऑरनाल्ड के साहित्य सिद्धांत
- आई.ए. रिचडर्स - मूल्य सिद्धान्त, सम्प्रेषण सिद्धान्त
- मार्क्सवादी समीक्षा,
- मनोविश्लेषणवादी समीक्षा
- यथार्थवाद
- आधुनिकता और उत्तर आधुनिकता

सन्दर्भ पुस्तकें

- पाश्चात्य काव्यशास्त्र की परंपरा- सं. नगेन्द्र, सावित्री सिन्हा
- पाश्चात्य समीक्षाशास्त्रः सिद्धांत और परिदृश्य- सं. नगेन्द्र
- प्लेटो के काव्य-सिद्धांत- निर्मला जैन
- अरस्तू का काव्यशास्त्र- सं. नगेन्द्र
- काव्य के उदात्त तत्त्व(भूमिका)- नगेन्द्र
- साहित्य सिद्धांत(अनूदित)- रेने वेलेक, आस्टिम, वारेन
- पाश्चात्य साहित्य-चिंतन- निर्मला जैन
- पाश्चात्य काव्यशास्त्र- देवेन्द्रनाथ
- संरचनावाद, उत्तरसंरचनावाद एवं प्राच्य काव्यशास्त्र- डॉ. गोपीचन्द नारंग

BH-HIN-SEC-304-रचनात्मक लेखन

क्रेडिट - 2 **कुल अंक-50**

समय- 1.30 घंटे, **परीक्षा अंक - 40, आंतरिक मूल्यांकन - 10**

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

रचनात्मक लेखन के सैद्धांतिक व व्यावहारिक पहलुओं से परिचय।

पाठ्यक्रम के अपेक्षित परिणाम

- विभिन्न विधाओं व रुपों का सैद्धांतिक ज्ञान।
- विभिन्न विधाओं में लेखन क्षमता का विकास।
- रचनात्मक लेखन के विभिन्न तत्वों की जानकारी।

परीक्षा संबधी निर्देश - प्रश्न पत्र तीन खंडों में विभक्त होगा।

- **समीक्षात्मक प्रश्न** - निर्धारित पाठ्यक्रम में से 4 समीक्षात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे। विद्यार्थी को 2 का उत्तर देना होगा। प्रत्येक के लिए 8 अंक निर्धारित हैं।
- **लघूत्तरी प्रश्न -** निर्धारित समस्त पाठ्यक्रम में से 4 लघूत्तरी प्रश्न पूछे जाएंगे। विद्यार्थी को इनमें से 2 के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक के लिए 4 अंक निर्धारित हैं।
- **वस्तुनिष्ठ प्रश्न** - निर्धारित समस्त पाठ्यक्रम में 8 वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जाएंगें। विद्यार्थी को प्रत्येक का उत्तर देना होगा। इसमें कोई विकल्प नहीं होगा। प्रत्येक के लिए 1 अंक निर्धारित हैं।

पाठ्य विषयः

रचनात्मक लेखन: स्वरूप एवं सिद्धांत

- भाव एवं विचार की रचना में रूपांतरण की प्रक्रिया
- विविध अभिव्यक्ति-क्षेत्र: साहित्य, पत्रकारिता, विज्ञापन, विविध गद्य अभिव्यक्तियाँ
- जनभाषा और लोकप्रिय संस्कृति
- लेखन के विविध रूप: मौखिक-लिखित, गद्य-पद्य, कथात्मक-कथेतर, नाटय -पाठय

रचनात्मक लेखन: भाषा-संदर्भ

- अर्थ निर्मिति के आधार: शब्दार्थ-मीमांसा, शब्द के प्राक-प्रयोग, नव्य-प्रयोग
- भाषिक संदर्भ: क्षेत्रीय, वर्ग-सापेक्ष, समूह-सापेक्ष

रचनात्मक लेखन: रचना-कौशल-विश्लेषण

- रचना-सौष्ठव: शब्द-शक्ति, प्रतीक, बिंब, अलंकार और वक्रताएं

विविध विधाओं की आधारभूत संरचनाओं का व्यावहारिक अध्ययन

- कविता: संवेदना, काव्यरूप, भाषा-सौष्ठव, छंद, लय, गति और तुक
- कथासाहित्य: वस्तु, पात्र, परिवेश एवं विमर्श
- नाटयसाहित्य: वस्तु, पात्र, परिवेश एवं रंगकर्म
- विविध गद्य-विधाएँ: निबंध, संस्मरण, व्यंग्य
- बाल साहित्य की आधारभूत संरचना

सूचना-तंत्र के लिए लेखन

- प्रिंट माध्यम: फीचर-लेखन, यात्रा-वृत्तांत, साक्षात्कार, पुस्तक-समीक्षा इलेक्टॉनिक माध्यम: रेडियो, दूरदर्शन, फिल्म पटकथा लेखन, टेलीविजन पटकथा लेखन

सहायक पुस्तकें

- इंटरनेट पत्रकारिता - सुरेश कुमार, तक्षशिला प्रकाशन
- हाइपर टेक्स्ट - वर्चुअल रियलिटी और इंटरनेट - जगदीश्वर चतुर्वेदी, अनामिका प्रकाशन
- फिल्म निर्देशन - कुलदीप सिन्हा
- साहित्य और सिनेमा : अंत संबंध और रूपांतरण - विपुल कुमार
- सिनेमा की सोच - अजय ब्रह्मात्मज
- सिनेमा के बारे में - जावेद अख्तर
- टेलिविजन की कहानी - श्याम कश्यप एवं मुकेश कुमार
- समाचार फीचर लेखन और संपादन कला - प्रो. हरिमोहन
- पत्रकारिता हेतु लेखन - डॉ. निशान्त सिंह, अर्चना पब्लिकेशन
- मीडिया लेखन : सिद्धांत और प्रयोग - मुकेश मानस, स्वराज प्रकाशन
- रेडियो प्रसारण - कौशल शर्मा, प्रतिभा प्रतिष्ठान

BH-HIN-GE-305-संपादन प्रक्रिया और साज सज्जा

क्रेडिट - 6 **कुल अंक-100**

समय-3 घंटे, **परीक्षा अंक - 80, आंतरिक मूल्यांकन - 20**

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

संपादन प्रक्रिया का ज्ञान।

पाठ्यक्रम के अपेक्षित परिणाम

- समाचारों के सैद्धांतिक व व्यावहारिक पक्षों के ज्ञान में अभिवृद्धि होगी।
- जनसंचार के प्रिंट माध्यमों के लिए संपादन-लेखन की क्षमता विकसित होगी।
- इलेक्ट्रोनिक माध्यमों के लिए संपादन-लेखन की क्षमता विकसित होगी।
- समाचारों के प्रति आलोचनात्मक व खोजी दृष्टि का विकसित होगी

परीक्षा संबधी निर्देश - प्रश्न पत्र तीन खंडों में विभक्त होगा।

- **समीक्षात्मक प्रश्न** - निर्धारित पाठ्यक्रम में से 7 समीक्षात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे। विद्यार्थी को 4 का उत्तर देना होगा। प्रत्येक के लिए 10 अंक निर्धारित हैं।
- **लघूत्तरी प्रश्न -** निर्धारित समस्त पाठ्यक्रम में से 10 लघूत्तरी प्रश्न पूछे जाएंगे। विद्यार्थी को इनमें से 6 के उत्तर (लगभग 150 शब्दों में) देने होंगे। प्रत्येक के लिए 5 अंक निर्धारित हैं।
- **वस्तुनिष्ठ प्रश्न -** निर्धारित समस्त पाठ्यक्रम में 10 वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जाएंगें। विद्यार्थी को प्रत्येक का उत्तर देना होगा। इसमें कोई विकल्प नहीं होगा। प्रत्येक के लिए 1 अंक निर्धारित हैं।

पाठ्य विषयः

- सम्पादन: अवधारणा, उद्देश्य, आधारभूत तत्त्व, निष्पक्षता और सामाजिक संदर्भ, समाचार विश्लेषण, सम्पादन-कला के सामान्य सिद्धान्त।
- सम्पादक और उपसम्पादक: योग्यता, दायित्व और महत्त्व।
- समाचार मूल्य, लीड, आमुख, शीर्षक-लेखन आदि प्रत्येक दृष्टि से चयनित सामग्री का मूल्यांकन और सम्पादन। सम्पादन चिहन और वर्तनी पुस्तिका। प्रिंट मीडिया की प्रयोजनपरक शब्दावली।
- सम्पादकीय लेखन: प्रमुख तत्त्व एवं प्रविधि। सम्पादकीय का सामाजिक प्रभाव।
- समाचार पत्र और पत्रिका के विविध स्तम्भों की योजना और उनका सम्पादन। साहित्य और कला जगत की सामग्री के सम्पादन की विशेषताएँ। छायाचित्र, कार्टून , रेखाचित्र, ग्राफिक्स आदि का सम्पादन।
- हिन्दी के राष्ट्रीय और प्रांतीय समाचार पत्रों की भाषा, आंचलिक प्रभाव और वर्तनी की समस्याएँ।

- साज-सज्जा और तैयारी: ग्राफिक्स और आकल्पन के मूलभूत सिद्धान्त। मुद्रण के तरीके, दैनिक समाचार पत्र का पृष्ठ-निर्माण (डमी), पत्रिका की साजसज्जा, रंग-संयोजन।

सहायक पुस्तकें

- संचारभाषा हिन्दी - सूर्यकुमार दीक्षित, लोकभारती प्रकाशन
- पत्रकारिता हेतु लेखन - डॉ. निशान्त सिंह, अर्चना पब्लिकेशन
- मीडिया लेखन : सिद्धांत और प्रयोग - मुकेश मानस, स्वराज प्रकाशन
- पटकथा लेखन - मनोहरश्याम जोशी
- पटकथा लेखन - मन्नू भंडारी
- आकाशवाणी समाचार की दुनियाँ - संजय कुमार
- समाचार फ़ीचर लेखन एवं संपादन कला - प्रो. हरिमोहन
- प्रयोजनमूलक हिन्दी - विनोद गोदारे
- प्रयोजनमूलक हिन्दी : सिद्धांत और प्रयोग - दंगल झाल्टे
- प्रालेखन प्रारूप - शिवनाराय चतुर्वेदी, वाणी प्रकाशन

सेमेस्टर - IV

BH-HIN-CC-401-भाषा विज्ञान और हिंदी भाषा

क्रेडिट - 6 **कुल अंक-100**

समय-3 घंटे, **परीक्षा अंक - 80, आंतरिक मूल्यांकन - 20**

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

हिंदी भाषा व भाषा विज्ञान से परिचय।

पाठ्यक्रम के अपेक्षित परिणाम

- हिंदी भाषा की संरचना व स्वरूप का त्ज्ञान।
- हिंदी भाषा के विविध रुपों व प्रयोगों का ज्ञान।
- भाषा विज्ञान के सिद्धांतों व व्यावहारिक पक्षों का ज्ञान।
- भाषा के बदलाव की दिशाएं व कारणों का बोध।

परीक्षा संबधी निर्देश - पाठ्यक्रम चार इकाइयों में विभक्त है। प्रश्न पत्र तीन खंडों में विभक्त होगा।

- **समीक्षात्मक प्रश्न -** निर्धारित पाठ्यक्रम की चारों इकाइयों में से आंतरिक विकल्प सहित एक-एक समीक्षात्मक प्रश्न पूछा जाएगा। विद्यार्थी को प्रत्येक का उत्तर देना होगा। प्रत्येक के लिए 10 अंक निर्धारित हैं।
- **लघूत्तरी प्रश्न -** निर्धारित समस्त पाठ्यक्रम में से दस लघूत्तरी प्रश्न पूछे जाएंगे। विद्यार्थी को इनमें से छः के (लगभग 150 शब्दों में) उत्तर देने होंगे। प्रत्येक के लिए 5 अंक निर्धारित हैं।
- **वस्तुनिष्ठ प्रश्न -** निर्धारित समस्त पाठ्यक्रम में 10 वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जाएंगें। विद्यार्थी को प्रत्येक का उत्तर देना होगा। इसमें कोई विकल्प नहीं होगा। प्रत्येक के लिए 1 अंक निर्धारित हैं।

पाठ्य विषय

इकाई 1-

- भाषा: परिभाषा, विशेषताएँ, भाषा परिवर्तन के कारण, भाषा और बोली।
- भाषा विज्ञान का स्वरूप, भाषा विज्ञान का ज्ञान की अन्य शाखाओं से संबंध।

इकाई 2-

- स्वनिम विज्ञान: परिभाषा, स्वनों का वर्गीकरण - स्थान और प्रयत्न के आधार पर। स्वन परिवर्तन के कारण।
- रूपिम विज्ञान - शब्द और रूप (पद), पद विभाग - नाम, आख्यात, उपसर्ग और निपात।

इकाई 3-

- वाक्य विज्ञान - वाक्य की परिभाषा, वाक्य के अनिवार्य तत्त्व, वाक्य के प्रकार, वाक्य परिवर्तन के कारण।
- अर्थ विज्ञान - शब्द और अर्थ का संबंध, अर्थ परिवर्तन के कारण और दिशाएँ।

इकाई 4-

- हिंदी भाषा और उसकी बोलियां-उपबोलियां।
- खड़ी बोली की सामान्य विशेषताएँ।
- हिंदी भाषा के विविध रूप - राष्ट्रभाषा, राजभाषा, सम्पर्क भाषा।
- हिंदी की संविधानिक स्थिति।
- देवनागरी लिपि का मानकीकरण

सन्दर्भ पुस्तकें

- हिन्दी भाषा का संक्षिप्त इतिहास- भोलानाथ तिवारी
- भाषाशास्त्र की रूपरेखा- उदय नारायण तिवारी
- भाषा(हिन्दी अनुवाद)- लैनर्ड ब्लूम फील्ड
- भाषा विज्ञान- भोलानाथ तिवारी
- हिंदी भाषा का इतिहास- धीरेंद्र वर्मा
- हिंदी भाषाः स्वरूप और विकास- कैलाशचंद्र भाटिया
- हिंदी शब्दानुशासन - कामता प्रसाद गुरु
- हिन्दी भाषा संरचना के विविध आयाम- रवींद्रनाथ श्रीवास्तव

BH-HIN-CC-402-हिंदी उपन्यास

क्रेडिट - 6 **कुल अंक-100**

समय-3 घंटे, **परीक्षा अंक - 80, आंतरिक मूल्यांकन - 20**

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

हिंदी उपन्यास से परिचय।

पाठ्यक्रम के अपेक्षित परिणाम

- हिंदी गद्य की उपन्यास विधा से परिचित होंगे।
- उपन्यास विधा की विशिष्टता की समझ बढ़ेगी।
- हिंदी उपन्यासों के माध्यम से समाज के यथार्थ की आलोचनात्मक समझ बनेगी।
- सामाजिक समस्याओं के प्रति संवेदनशीलता बढ़ेगी।

परीक्षा संबधी निर्देश - प्रश्न पत्र पांच खंडों में विभक्त होगा।

- **व्याख्या खंड** - पाठ्यक्रम में निर्धारित रचनाओं से दो पाठांश दिए जायेंगे। विद्यार्थी को किसी एक की संदर्भ सहित व्याख्या करनी होगी। इसके लिए 10 अंक निर्धारित हैं।
- **पाठ-बोध खंड** - पाठ्यक्रम में निर्धारित रचनाओं से एक पाठांश तथा तत्संबंधी 5 प्रश्न दिए जायेंगे। विद्यार्थी को उस पाठांश के आधार पर उत्तर देने होंगे। इसके लिए 10 अंक निर्धारित हैं।
- **समीक्षात्मक खंड** - पाठ्यक्रम में निर्धारित रचनाकारों के साहित्यिक परिचय, उनके साहित्य की विषयवस्तु, मूल संवेदना व रचना-सौष्ठव संबंधी पांच समीक्षात्मक प्रश्न पूछे जायेंगें। विद्यार्थी को किंही तीन का उत्तर देना होगा। प्रत्येक के लिए 10 अंक निर्धारित हैं।
- **लघूत्तरी खंड** - निर्धारित पाठ्यक्रम में से सात लघूत्तरी प्रश्न पूछे जाएंगे। विद्यार्थी को इनमें से चार के उत्तर (लगभग 150 शब्दों में) देने होंगे। प्रत्येक के लिए 5 अंक निर्धारित हैं।
- **वस्तुनिष्ठ खंड** - निर्धारित समस्त पाठ्यक्रम में से 10 वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जाएंगें। विद्यार्थी को प्रत्येक का उत्तर देना होगा। इसमें कोई विकल्प नहीं होगा। इसके लिए 10 अंक निर्धारित हैं।

निर्धारित रचनाएं

- गबन - प्रेमचंद
- त्यागपत्र - जैनेन्द्र कुमार
- महाभोज - मन्नू भंडारी

सन्दर्भ पुस्तकें

- उपन्यास के सिद्धांत- जार्ज लुकाच
- उपन्यास और लोक जीवन- रॉल्फ फॉक्स
- हिन्दी उपन्यास का इतिहास- गोपाल राय
- आज का हिन्दी उपन्यास- इन्द्रनाथ मदान
- हिन्दी उपन्यासः पहचान और परख- इन्द्रनाथ मदान
- हिन्दी उपन्यासः एक अंर्तयात्रा- रामदरश मिश्र

BH-HIN-CC-403-हिंदी कहानी

क्रेडिट - 6 **कुल अंक-100**
समय-3 घंटे, **परीक्षा अंक - 80, आंतरिक मूल्यांकन - 20**

पाठ्यक्रम का उद्देश्य
हिंदी गद्य की कहानी विधा से परिचय।

पाठ्यक्रम के अपेक्षित परिणाम

- हिंदी गद्य की कहानी विधा से परिचित होंगे।
- कहानी विधा की विशिष्टता की समझ बढ़ेगी।
- हिंदी गद्यकारों की रचनाओं के माध्यम से समाज के यथार्थ की आलोचनात्मक समझ बनेगी।
- सामाजिक समस्याओं के प्रति संवेदनशीलता बढ़ेगी।

परीक्षा संबधी निर्देश - प्रश्न पत्र पांच खंडों में विभक्त होगा।

- **व्याख्या खंड** - पाठ्यक्रम में निर्धारित रचनाओं से दो पाठांश दिए जायेंगे। विद्यार्थी को किसी एक की संदर्भ सहित व्याख्या करनी होगी। इसके लिए 10 अंक निर्धारित हैं।
- **पाठ-बोध खंड -** पाठ्यक्रम में निर्धारित रचनाओं से एक पाठांश तथा तत्संबंधी 5 प्रश्न दिए जायेंगे। विद्यार्थी को उस पाठांश के आधार पर उत्तर देने होंगे। इसके लिए 10 अंक निर्धारित हैं।
- **समीक्षात्मक खंड -** पाठ्यक्रम में निर्धारित रचनाकारों के साहित्यिक परिचय, उनके साहित्य की विषयवस्तु, मूल संवेदना व रचना-सौष्ठव संबंधी पांच समीक्षात्मक प्रश्न पूछे जायेंगें। विद्यार्थी को किंही तीन का उत्तर देना होगा। प्रत्येक के लिए 10 अंक निर्धारित हैं।
- **लघूत्तरी खंड -** निर्धारित पाठ्यक्रम में से सात लघूत्तरी प्रश्न पूछे जाएंगे। विद्यार्थी को इनमें से चार के उत्तर (लगभग 150 शब्दों में) देने होंगे। प्रत्येक के लिए 5 अंक निर्धारित हैं।
- **वस्तुनिष्ठ खंड -** निर्धारित समस्त पाठ्यक्रम में से 10 वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जाएंगें। विद्यार्थी को प्रत्येक का उत्तर देना होगा। इसमें कोई विकल्प नहीं होगा। इसके लिए 10 अंक निर्धारित हैं।

निर्धारित रचनाएं

- उसने कहा था: चंद्रधर शर्मा गुलेरी
- पूस की रात: प्रेमचंद
- आकाशदीप: जयशंकर प्रसाद
- हार की जीत: सुदर्शन
- पाजेब: जैनेन्द्र कुमार

- तीसरी कसम: फणीश्वरनाथ ’रेणु’
- मलबे का मालिक: मोहन राकेश
- परिन्दे: निर्मल वर्मा
- दोपहर का भोजन: अमरकांत
- सिक्का बदल गया: कृष्णा सोबती
- पिता: ज्ञानरंजन

सहायक पुस्तकें

- कहानी : नयी कहानी - नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन
- हिन्दी कहानी का पहला दशक - भवदेय पांडेय
- हिन्दी कहानी का विकास - मधुरेश
- एक दुनियाँ समानान्तर (भूमिका) - राजेन्द्र यादव
- हिन्दी कहानी का इतिहास - गोपाल राय
- नई कहानी की भूमिका - कमलेश्वर
- हिन्दी कहानी : एक अंतरंग पहचान - रामदरश मिश्र
- कहानी : प्रवृत्ति और विश्लेषण - सुरेन्द्र उपाध्याय

BH-HIN-SEC-404-अनुवादः सिद्धांत और प्रविधि

क्रेडिट - 2 **कुल अंक-50**

समय-1.30 घंटे, **परीक्षा अंक - 40, आंतरिक मूल्यांकन - 10**

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

अनुवाद के सैद्धांतिक व व्यावहारिक पहलुओं से परिचित करवाना।

पाठ्यक्रम से अपेक्षित परिणाम

- अनुवाद के सैद्धांतिक व व्यवहारिक पहलुओं से परिचय।
- विभिन्न विषयों का अनुवाद करने में सक्षम।
- भाषा प्रयोग की दक्षता में अभिवृद्धि।
- शासन-प्रशासन के कार्यों को करने में दक्षता।

परीक्षा संबधी निर्देश - प्रश्न पत्र तीन खंडों में विभक्त होगा।

- **समीक्षात्मक प्रश्न** - निर्धारित पाठ्यक्रम में से 4 समीक्षात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे। विद्यार्थी को 2 का उत्तर देना होगा। प्रत्येक के लिए 8 अंक निर्धारित हैं।
- **लघूत्तरी प्रश्न** - निर्धारित समस्त पाठ्यक्रम में से 4 लघूत्तरी प्रश्न पूछे जाएंगे। विद्यार्थी को इनमें से 2 के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक के लिए 4 अंक निर्धारित हैं।
- **वस्तुनिष्ठ प्रश्न** - निर्धारित समस्त पाठ्यक्रम में 8 वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जाएंगें। विद्यार्थी को प्रत्येक का उत्तर देना होगा। इसमें कोई विकल्प नहीं होगा। प्रत्येक के लिए 1 अंक निर्धारित हैं।

पाठ्य विषयः

- अनुवाद का अर्थ, स्वरूप एवं प्रकृति। अनुवाद कार्य की आवश्यकता एवं महत्त्व। बहुभाषी समाज में परिवर्तन तथा बौद्धिक-सांस्कृतिक आदान-प्रदान में अनुवाद कार्य की भूमिका।
- अनुवाद के प्रकार: शाब्दिक अनुवाद, भावानुवाद, छायानुवाद एवं सारानुवाद। अनुवाद-प्रक्रिया के तीन चरण- विश्लेषण, अंतरण एवं पुनर्गठन। अनुवाद की भूमिका के तीन पक्ष - पाठक की भूमिका (अर्थग्रहण की) द्विभाषिक की भूमिका (अर्थांतरण की प्रक्रिया) एवं रचयिता की भूमिका (अर्थसम्प्रेषण की प्रक्रिया)
- सर्जनात्मक साहित्य के अनुवाद की अपेक्षाएं। सर्जनात्मक साहित्य के अनुवाद और तकनीकी अनुवाद में अन्तर। गद्यानुवाद एवं काव्यानुवाद में संरचनात्मक भेद।
- किन्हीं दो अनूदित कृतियों का समीक्षात्मक अध्ययन।
  क. 'गीतांजलि' का हिन्दी अनुवाद - हंस कुमार तिवारी
  ख. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा हिन्दी में किया गया भावानुवाद 'विश्वप्रपंच की भूमिका'।

- कार्यालयी अनुवाद: राजभाषा नीति की अनुपालना में धारा 3(3) के अन्तर्गत निर्धारित दस्तावेज का अनुवाद। शासकीय पत्र/अर्धशासकीय पत्र/परिपत्र (सर्कुलर)/ज्ञापन (प्रजेंटेशन)/कार्यालय आदेश / अधिसूचना/संकल्प-प्रस्ताव (रेज्योलूशन)/ निविदा-संविदा/ विज्ञापन।
- पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण के सिद्धान्त, कार्यालय, प्रशासन विधि, मानविकी बैंक एवं रेलवे में प्रयुक्त होने वाले प्रमुख पारिभाषिक शब्दावली तथा प्रमुख वाक्यांश के अंग्रेजी तथा हिन्दी रूप।

सहायक पुस्तकें

- अनुवाद कला - डॉ. एन. ई. विश्वनाथ अय्यर
- अनुवाद का भाषिक सिद्धांत - जे. सी. कैटफोर्ड
- अनुवाद विज्ञान : सिद्धांत और अनुप्रयोग - नगेन्द्र
- अनुवाद : सिद्धांत और प्रयोग - जी. गोपीनाथन
- वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद की समस्याएं - भोलानाथ तिवारी
- पश्चिम में अनुवाद कला के मूल स्त्रोत - डॉ. गार्गी गुप्त, विश्वनाथ गुप्त
- अनुवाद विज्ञान की भूमिका - कृष्णकुमार गोस्वामी

BH-HIN-GE-405-आधुनिक भारतीय कविता

क्रेडिट - 6 **कुल अंक-100**

समय-3 घंटे, **परीक्षा अंक - 80, आंतरिक मूल्यांकन - 20**

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

भारतीय भाषाओं की कविता व कवियों से परिचय।

पाठ्यक्रम के अपेक्षित परिणाम

- भारतीय कविता की अवधारणा की समझ
- भारतीय भाषाओं के प्रमुख कवियों की कविताओं की समझ।
- भारतीय संस्कृति के लगाव, राष्ट्रीय एकता व अंखडता की भावना का विकास।
- साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन की दृष्टि का विकास

परीक्षा संबधी निर्देश - प्रश्न पत्र पांच खंडों में विभक्त होगा।

- **व्याख्या खंड** - पाठ्यक्रम में निर्धारित रचनाओं से दो पाठांश दिए जायेंगे। विद्यार्थी को किसी एक की संदर्भ सहित व्याख्या करनी होगी। इसके लिए 10 अंक निर्धारित हैं।
- **पाठ-बोध खंड -** पाठ्यक्रम में निर्धारित रचनाओं से एक पाठांश तथा तत्संबंधी 5 प्रश्न दिए जायेंगे। विद्यार्थी को उस पाठांश के आधार पर उत्तर देने होंगे। इसके लिए 10 अंक निर्धारित हैं।
- **समीक्षात्मक खंड -** पाठ्यक्रम में निर्धारित रचनाकारों के साहित्यिक परिचय, उनके साहित्य की विषयवस्तु, मूल संवेदना व रचना-सौष्ठव संबंधी पांच समीक्षात्मक प्रश्न पूछे जायेंगें। विद्यार्थी को किंही तीन का उत्तर देना होगा। प्रत्येक के लिए 10 अंक निर्धारित हैं।
- **लघूत्तरी खंड -** निर्धारित पाठ्यक्रम में से सात लघूत्तरी प्रश्न पूछे जाएंगे। विद्यार्थी को इनमें से चार के उत्तर (लगभग 150 शब्दों में) देने होंगे। प्रत्येक के लिए 5 अंक निर्धारित हैं।
- **वस्तुनिष्ठ खंड -** निर्धारित समस्त पाठ्यक्रम में से 10 वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जाएंगें। विद्यार्थी को प्रत्येक का उत्तर देना होगा। इसमें कोई विकल्प नहीं होगा। इसके लिए 10 अंक निर्धारित हैं।

निम्नलिखित कवियों की पाँच-पाँच कविताएँ

हिंदी

- निराला
- मुक्तिबोध

उर्दू

- गालिब
- हाली

पंजाबी

- लालसिंह दिल
- सुरजीत पातर

बांग्ला

- रवीन्द्रनाथ ठाकुर
- काज़ी नज़रुल इस्लाम

सहायक पुस्तकें

- भारतीय साहित्य : स्थापनाएं और प्रस्तावनाएं - के. सच्चिदानंद
- भारतीय साहित्य की भूमिका - डॉ. रामविलास शर्मा
- भारतीय साहित्य - डॉ. राम छबीला त्रिपाठी
- भारतीय साहित्य - डॉ. नगेन्द्र
- भारतीय साहित्य - डॉ. मूलचन्द गौतम
- भारतीय साहित्य - भोलाशंकर व्यास
- परंपरा का मूल्यांकन - रामविलास शर्मा
- संस्कृति के चार अध्याय - रामधारी सिंह दिनकर

सेमेस्टर -V

BH-HIN-CC-501-हिंदी नाटक एवं एकांकी हिंदी

क्रेडिट - 6 **कुल अंक-100**

समय-3 घंटे, **परीक्षा अंक - 80, आंतरिक मूल्यांकन - 20**

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

हिंदी नाटक व एकांकी से परिचय।

पाठ्यक्रम के अपेक्षित परिणाम

- हिंदी नाटक साहित्य के बारे में ज्ञान।
- हिंदी नाटक साहित्य के विभिन्न हस्ताक्षरों के साहित्य से परिचय व आलोचनात्मक नाट्य बोध का विकास।
- एंकाकी के विभिन्न स्वरों व सरोकारों का ज्ञान।
- नाटक व एकांकी लेखन व मंचन में रुचि व क्षमता का विकास।

परीक्षा संबधी निर्देश - प्रश्न पत्र पांच खंडों में विभक्त होगा।

- **व्याख्या खंड** - पाठ्यक्रम में निर्धारित रचनाओं से दो पाठांश दिए जायेंगे। विद्यार्थी को किसी एक की संदर्भ सहित व्याख्या करनी होगी। इसके लिए 10 अंक निर्धारित हैं।
- **पाठ-बोध खंड -** पाठ्यक्रम में निर्धारित रचनाओं से एक पाठांश तथा तत्संबंधी 5 प्रश्न दिए जायेंगे। विद्यार्थी को उस पाठांश के आधार पर उत्तर देने होंगे। इसके लिए 10 अंक निर्धारित हैं।
- **समीक्षात्मक खंड -** पाठ्यक्रम में निर्धारित रचनाकारों के साहित्यिक परिचय, उनके साहित्य की विषयवस्तु, मूल संवेदना व रचना-सौष्ठव संबंधी पांच समीक्षात्मक प्रश्न पूछे जायेंगें। विद्यार्थी को किंही तीन का उत्तर देना होगा। प्रत्येक के लिए 10 अंक निर्धारित हैं।
- **लघूत्तरी खंड -** निर्धारित पाठ्यक्रम में से सात लघूत्तरी प्रश्न पूछे जाएंगे। विद्यार्थी को इनमें से चार के उत्तर (लगभग 150 शब्दों में) देने होंगे। प्रत्येक के लिए 5 अंक निर्धारित हैं।
- **वस्तुनिष्ठ खंड -** निर्धारित समस्त पाठ्यक्रम में से 10 वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जाएंगें। विद्यार्थी को प्रत्येक का उत्तर देना होगा। इसमें कोई विकल्प नहीं होगा। इसके लिए 10 अंक निर्धारित हैं।

निर्धारित रचनाएं

नाटक

- अंधेर नगरी - भारतेंदु हरिश्चन्द्र
- माधवी - भीष्म साहनी

एकांकी

- औरंगजेब की आखिरी रात: रामकुमार वर्मा
- भोर का तारा: जगदीशचंद्र माथुर

सन्दर्भ पुस्तकें

- हिन्दी नाटकः उद्भव और विकास- डॉ दशरथ ओझा
- हिन्दी नाटक का आत्मसंघर्ष- गिरीश रस्तोगी
- हिन्दी एकांकी- सिद्धनाथ कुमार
- हिन्दी नाटक - बच्चन सिंह
- हिन्दी नाटक का आत्मसंघर्ष - गिरीश रस्तोगी
- आधुनिक भारतीय नाट्य विमर्श - जयदेव तनेजा
- रंग दर्शन - नेमिचन्द्र जैन
- रंगमंच के सिद्धांत - सं. महेश आनन्द, देवेन्द्रराज अंकुर

BH-HIN-CC-502-हिंदी निबंध एवं अन्य गद्य विधाएं

क्रेडिट - 6 **कुल अंक-100**

समय-3 घंटे, **परीक्षा अंक - 80, आंतरिक मूल्यांकन - 20**

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

हिंदी निबंध व अन्य गद्य विधाओं से परिचय।

पाठ्यक्रम के अपेक्षित परिणाम

- हिंदी निबंध के स्वरूप व विकास की जानकारी।
- रेखाचित्र व संस्मरण आदि विधाओं के साहित्य की जानकारी।
- वैचारिक व आलोचनात्मक दृष्टि का विकास।
- विभिन्न शैलियों के निबंध लेखन की योग्यता व क्षमता का विकास।

परीक्षा संबधी निर्देश - प्रश्न पत्र पांच खंडों में विभक्त होगा।

- **व्याख्या खंड** - पाठ्यक्रम में निर्धारित रचनाओं से दो पाठांश दिए जायेंगे। विद्यार्थी को किसी एक की संदर्भ सहित व्याख्या करनी होगी। इसके लिए 10 अंक निर्धारित हैं।
- **पाठ-बोध खंड** - पाठ्यक्रम में निर्धारित रचनाओं से एक पाठांश तथा तत्संबंधी 5 प्रश्न दिए जायेंगे। विद्यार्थी को उस पाठांश के आधार पर उत्तर देने होंगे। इसके लिए 10 अंक निर्धारित हैं।
- **समीक्षात्मक खंड** - पाठ्यक्रम में निर्धारित रचनाकारों के साहित्यिक परिचय, उनके साहित्य की विषयवस्तु, मूल संवेदना व रचना-सौष्ठव संबंधी पांच समीक्षात्मक प्रश्न पूछे जायेंगें। विद्यार्थी को किंही तीन का उत्तर देना होगा। प्रत्येक के लिए 10 अंक निर्धारित हैं।
- **लघूत्तरी खंड** - निर्धारित पाठ्यक्रम में से सात लघूत्तरी प्रश्न पूछे जाएंगे। विद्यार्थी को इनमें से चार के उत्तर (लगभग 150 शब्दों में) देने होंगे। प्रत्येक के लिए 5 अंक निर्धारित हैं।
- **वस्तुनिष्ठ खंड** - निर्धारित समस्त पाठ्यक्रम में से 10 वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जाएंगें। विद्यार्थी को प्रत्येक का उत्तर देना होगा। इसमें कोई विकल्प नहीं होगा। इसके लिए 10 अंक निर्धारित हैं।

निर्धारित रचनाएं

निबंध

- सरदार पूर्ण सिंह- मजदूरी और प्रेम
- रामचन्द्र शुक्ल - करुणा
- हजारी प्रसाद द्विवेदी - देवदारु
- कुबेरनाथ राय - एक महाकाव्य का जन्म
- शिवपूजन सहाय - महाकवि जयशंकर प्रसाद

- डा. नगेंद्र - दादा स्वर्गीय बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'
- रामवृक्ष बेनीपुरी - रजिया
- माखनलाल चतुर्वेदी - तुम्हारी स्मृति

संदर्भ पुस्तकें

- वाङ्मय विमर्श - आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
- साहित्यिक विधाएँ : रूपात्मक विकास - डॉ. बैजनाथ सिंहल
- आत्मकथा की संस्कृति - पंकज चतुर्वेदी
- आत्मकथा और उपन्यास - ज्ञानेन्द्र कुमार, सन्तोष
- हिन्दी गद्य का इतिहास - रामचन्द्र तिवारी
- आधुनिक हिन्दी गद्य साहित्य का विकास और विश्लेषण - विजयमोहन सिंह
- हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास - बच्चन सिंह

BH-HIN-DSE-503-राष्ट्रीय काव्यधारा

क्रेडिट - 2 **कुल अंक-80**

समय-1.30 घंटे, **परीक्षा अंक - 40, आंतरिक मूल्यांकन - 10**

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

राष्ट्रीय काव्यधारा से परिचय।

पाठ्यक्रम के अपेक्षित परिणाम

- हिंदी की राष्ट्रीय काव्यधारा व उसके सरोकारों का ज्ञान।
- हिंदी के राष्ट्रीय धारा के साहित्य से परिचय।
- हिंदी के साहित्य की राष्ट्रीय चेतना व साहित्य का राष्ट्रीय आंदोलन में योगदान।
- राष्ट्रीय भावना का विकास व स्वतंत्रता आंदोलन की समझ।

परीक्षा संबधी निर्देश - प्रश्न पत्र पांच खंडों में विभक्त होगा।

- **व्याख्या खंड** - पाठ्यक्रम में निर्धारित रचनाओं से दो पाठांश दिए जायेंगे। विद्यार्थी को किसी एक की संदर्भ सहित व्याख्या करनी होगी। इसके लिए 10 अंक निर्धारित हैं।
- **पाठ-बोध खंड -** पाठ्यक्रम में निर्धारित रचनाओं से एक पाठांश तथा तत्संबंधी 5 प्रश्न दिए जायेंगे। विद्यार्थी को उस पाठांश के आधार पर उत्तर देने होंगे। इसके लिए 10 अंक निर्धारित हैं।
- **समीक्षात्मक खंड -** पाठ्यक्रम में निर्धारित रचनाकारों के साहित्यिक परिचय, उनके साहित्य की विषयवस्तु, मूल संवेदना व रचना-सौष्ठव संबंधी पांच समीक्षात्मक प्रश्न पूछे जायेंगें। विद्यार्थी को किंही तीन का उत्तर देना होगा। प्रत्येक के लिए 10 अंक निर्धारित हैं।
- **लघूत्तरी खंड -** निर्धारित पाठ्यक्रम में से सात लघूत्तरी प्रश्न पूछे जाएंगे। विद्यार्थी को इनमें से चार के उत्तर (लगभग 150 शब्दों में) देने होंगे। प्रत्येक के लिए 5 अंक निर्धारित हैं।
- **वस्तुनिष्ठ खंड -** निर्धारित समस्त पाठ्यक्रम में से 10 वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जाएंगें। विद्यार्थी को प्रत्येक का उत्तर देना होगा। इसमें कोई विकल्प नहीं होगा। इसके लिए 10 अंक निर्धारित हैं।

निम्नलिखित कवियों की पाँच-पाँच कविताएँ

- मैथिलीशरण गुप्त
- माखनलाल चतुर्वेदी
- सोहनलाल द्विवेदी
- बालकृष्ण शर्मा ‘नवीन’
- रामधारी सिंह ‘दिनकर’

सहायक पुस्तकें

- राष्ट्रवाद और हिन्दी साहित्य - डॉ. राजकुमार पाण्डेय
- राष्ट्रवाद - रवीन्द्रनाथ टैगोर
- राष्ट्रवाद, भारतीयता और पत्रकारिता - प्रो. संजय द्विवेदी
- हिन्दी की साहित्यिक संस्कृति और भारतीय आधुनिकता - डॉ. राजकुमार
- हिन्दी कविता का अतीत और वर्तमान - मैनेजर पाण्डेय
- कविता में बँटवारा - रामकुमार कृषक
- आधुनिक हिन्दी कविता में विचार - डॉ. बलदेव वंशी
- आधुनिक कविता का पुनर्पाठ - करूणाशंकर उपाध्याय

BH-HIN-DSE-504-प्रेमचंद

क्रेडिट - 2 **कुल अंक-80**

समय-1.30 घंटे, **परीक्षा अंक - 40, आंतरिक मूल्यांकन - 10**

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

प्रेमचंद के साहित्य से परिचय

पाठ्यक्रम के अपेक्षित परिणाम

- प्रेमचंद द्वारा विभिन्न विधाओं में रचित साहित्य का परिचय।
- प्रेमचंद के साहित्यिक-सांस्कृतिक सरोकारों का ज्ञान।
- प्रेमचंद के हिंदी साहित्य पर प्रभाव का ज्ञान।
- साहित्य अध्ययन की आलोचनात्मक दृष्टि का विकास।

परीक्षा संबधी निर्देश - प्रश्न पत्र पांच खंडों में विभक्त होगा।

- **व्याख्या खंड** - पाठ्यक्रम में निर्धारित रचनाओं से दो पाठांश दिए जायेंगे। विद्यार्थी को किसी एक की संदर्भ सहित व्याख्या करनी होगी। इसके लिए 10 अंक निर्धारित हैं।
- **पाठ-बोध खंड -** पाठ्यक्रम में निर्धारित रचनाओं से एक पाठांश तथा तत्संबंधी 5 प्रश्न दिए जायेंगे। विद्यार्थी को उस पाठांश के आधार पर उत्तर देने होंगे। इसके लिए 10 अंक निर्धारित हैं।
- **समीक्षात्मक खंड -** पाठ्यक्रम में निर्धारित रचनाओं का परिचय, विषयवस्तु, मूल संवेदना व रचना-सौष्ठव संबंधी पांच समीक्षात्मक प्रश्न पूछे जायेंगें। विद्यार्थी को किंही तीन का उत्तर देना होगा। प्रत्येक के लिए 10 अंक निर्धारित हैं।
- **लघूत्तरी खंड -** निर्धारित पाठ्यक्रम में से सात लघूत्तरी प्रश्न पूछे जाएंगे। विद्यार्थी को इनमें से चार के उत्तर (लगभग 150 शब्दों में) देने होंगे। प्रत्येक के लिए 5 अंक निर्धारित हैं।
- **वस्तुनिष्ठ खंड -** निर्धारित समस्त पाठ्यक्रम में से 10 वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जाएंगें। विद्यार्थी को प्रत्येक का उत्तर देना होगा। इसमें कोई विकल्प नहीं होगा। इसके लिए 10 अंक निर्धारित हैं।

पाठ्य विषयः

- उपन्यास - सेवासदन
- नाटक - कर्बला
- निबंध - साहित्य का उद्देश्य, बच्चों को स्वाधीन करो,
- कहानियाँ - पूस की रात, ठाकुर का कुआं, शतरंज के खिलाड़ी, पंच परमेश्वर, ईदगाह, दो बैलों की कथा।

सहायक पुस्तकें

- प्रेमचन्द : चिन्तन और कला- इन्द्रनाथ मदान, सरस्वती प्रैस, बनारस, 1961
- प्रेमचन्द : जीवन, कला और कृतित्व, हंसराज रहबर, आत्माराम एंड सन्स, 1962
- उपन्यासकार प्रेमचन्द- सुरेशचन्द्र गुप्त एवं रमेशचंद गुप्त, अशोक प्रकाशन, दिल्ली, 1966
- प्रेमचंदयुगीन भारतीय समाज- इन्द्रमोहन कुमार सिन्हा, बिहारी हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना
- प्रेमचंद- सत्येन्द्र, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1976
- प्रेमचंद और उनका युग- रामविलास शर्मा, राजपाल प्रकाशन, दिल्ली, 1981
- समकालीन जीवन संदर्भ और प्रेमचंद- धर्मेन्द्र गुप्त, पीयूष प्रकाशन, दिल्ली, 1988
- कहानीकार प्रेमचंद- नूरजहां, हिन्दी साहित्य भण्डार, लखनऊ, 1975
- प्रेमचंद और भारतीय किसान- रामबक्ष, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 1983
- प्रेमचंद और उनका साहित्य- शीला गुप्त, साहित्य भवन प्रा. लिमिटेड, इलाबाद, 1979
- प्रेमचंद के उपन्यासों का शिल्प विधान - कमल किशोर गोयनका
- प्रेमचंद : साहित्यिक विवेचन - नंददुलारे वाजपेयी, लोकभारती प्रकाशन

BH-HIN-GE-505-सर्जनात्मक लेखन के विविध क्षेत्र

क्रेडिट - 6 **कुल अंक-100**

समय-3 घंटे, **परीक्षा अंक - 80, आंतरिक मूल्यांकन - 20**

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

सर्जनात्मक लेखन के विविध आयामों से परिचय

पाठ्यक्रम के अपेक्षित परिणाम

- सर्जनात्मक लेखन की विविध विधाओं के सैद्धांतिक व व्यावहारिक पक्षों का ज्ञान।
- प्रिंट माध्यमों के लिए रचनात्मक लेखन क्षमता का विकास।
- दृश्य-श्रव्य माध्यमों के लिए लेखन की क्षमता का विकास।
- इंटरनेट व सामाजिक माध्यमों के लेखन के प्रति आलोचनात्मक दृष्टि का विकास

परीक्षा संबधी निर्देश - प्रश्न पत्र तीन खंडों में विभक्त होगा।

- **समीक्षात्मक प्रश्न** - निर्धारित पाठ्यक्रम में से 7 समीक्षात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे। विद्यार्थी को 4 का उत्तर देना होगा। प्रत्येक के लिए 10 अंक निर्धारित हैं।
- **लघूत्तरी प्रश्न -** निर्धारित समस्त पाठ्यक्रम में से 10 लघूत्तरी प्रश्न पूछे जाएंगे। विद्यार्थी को इनमें से 6 के उत्तर (लगभग 150 शब्दों में) देने होंगे। प्रत्येक के लिए 5 अंक निर्धारित हैं।
- **वस्तुनिष्ठ प्रश्न -** निर्धारित समस्त पाठ्यक्रम में 10 वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जाएंगें। विद्यार्थी को प्रत्येक का उत्तर देना होगा। इसमें कोई विकल्प नहीं होगा। प्रत्येक के लिए 1 अंक निर्धारित हैं।

पाठ्य विषयः

- रिपोर्ताज़: अर्थ, स्वरूप, रिपोर्ताज एवं अन्य गद्य रूप, रिपोर्ताज और फीचर लेखन-प्रविधि।
- फीचर लेखन: विषय-चयन, सामग्री-निर्धारण, लेखन-प्रविधि। सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, विज्ञान, पर्यावरण, खेलकूद से सम्बद्ध विषयों पर फीचर लेखन।
- साक्षात्कार (इण्टरव्यू/भेंटवार्ता): उद्देश्य, प्रकार, साक्षात्कार-प्रविधि, महŸव।
- स्तंभ लेखन: समाचार पत्र के विविध स्तंभ, स्तंभ लेखन की विशेषताएँ, समाचार पत्र और सावधि पत्रिकाओं के लिए समसामयिक, ज्ञानवर्धक और मनोरंजक सामग्री का लेखन। सप्ताहांत अतिरिक्त सामग्री और परिशिष्ट।
- दृश्य-सामग्री (छायाचित्र, कार्टून, रेखाचित्र, ग्राफिक्स आदि) से सम्बन्धित लेखन।
- बाजार, खेलकूद, फिल्म, पुस्तक और कला समीक्षा।
- आर्थिक पत्रकारिता, खेल पत्रकारिता, ग्रामीण और विकास पत्रकारिता, फोटो पत्रकारिता।

सहायक पुस्तकें

- नई पत्रकारिता और समाचार लेखन- सविता चड्डा, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली, 1992
- समाचार फीचर-लेखन एवं संपादन कला- हरिमोहन, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली, 1992
- हिन्दी पत्रकारिता इतिहास एवं स्वरूप- शिवकुमार दुबे, परिमल प्रकाशन, इलाहाबाद, 1993
- आधुनिक पत्रकारिता- अर्जून तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1988
- पत्रकारिता के नए आयाम- एस के दुबे, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली,
- पत्रकारिता : परिवेश औ प्रवृत्तियां- डॉ. पृथ्वीनाथ पाण्डेय, राजकमल प्रकाशन
- इंटरनेट पत्रकारिता - सुरेश कुमार, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली
- इलेक्ट्रॉनिक पत्रकारिता - डॉ. अजय कुमार सिंह, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद
- भारतीय समाचार पत्रों का इतिहास- जेफ्रीरोबिन्स
- जनसंचार माध्यमों का मायालोक- नॉम चॉम्स्की
- संस्कृति उद्योग- टी. डब्ल्यू एडोर्नो
- टेलीविजन की कहानी - श्याम कश्यप, मुकेश कुमार, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
- जनसंचार - सं. राधेश्याम शर्मा, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकुला

सेमेस्टर - VI

BH-HIN-CC-601-हिंदी की साहित्यिक पत्रकारिता

क्रेडिट - 6	**कुल अंक-100**
समय-3 घंटे,	**परीक्षा अंक - 80, आंतरिक मूल्यांकन - 20**

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

हिंदी की साहित्यिक पत्रकारिता से परिचय।

पाठ्यक्रम के अपेक्षित परिणाम

- हिंदी की साहित्यिक पत्रकारिता के विकास, नवजागरण व राष्ट्रीय आंदोलन में पत्रकारिता के योगदान की जानकारी।
- हिंदी के विभिन्न पाहित्यिक पत्रकारों व उनकी विशिष्टिताओं की जानकारी।
- हिंदी पत्रकारी के सरोकारों व मूल्यों की जानकारी।
- साहित्यिक पत्रकारिता में रुचि व दक्षता का विकास

परीक्षा संबधी निर्देश - पाठ्यक्रम चार इकाइयों में विभक्त है। प्रश्न पत्र तीन खंडों में विभक्त होगा।

- **समीक्षात्मक प्रश्न -** निर्धारित पाठ्यक्रम में से 7 समीक्षात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे। विद्यार्थी को 4 का उत्तर देना होगा। प्रत्येक के लिए 10 अंक निर्धारित हैं।
- **लघूत्तरी प्रश्न -** निर्धारित समस्त पाठ्यक्रम में से दस लघूत्तरी प्रश्न पूछे जाएंगे। विद्यार्थी को इनमें से छः के (लगभग 150 शब्दों में) उत्तर देने होंगे। प्रत्येक के लिए 5 अंक निर्धारित हैं।
- **वस्तुनिष्ठ प्रश्न -** निर्धारित समस्त पाठ्यक्रम में 10 वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जाएंगें। विद्यार्थी को प्रत्येक का उत्तर देना होगा। इसमें कोई विकल्प नहीं होगा। प्रत्येक के लिए 1 अंक निर्धारित हैं।

पाठ्य विषय

- साहित्यिक पत्रकारिताः अर्थ, अवधारणा और महत्त्व।
- भारतेन्दुयुगीन साहित्यिक पत्रकारिता: परिचय और प्रवृत्तियाँ।
- द्विवेदीयुगीन साहित्यिक पत्रकारिता: परिचय और प्रवृत्तियाँ।
- प्रेमचंद और छायावादयुगीन साहित्यिक पत्रकारिता: परिचय और प्रवृत्तियाँ।
- स्वातंत्र्योत्तर साहित्यिक पत्रकारिता: परिचय और प्रवृत्तियाँ।
- समकालीन साहित्यिक पत्रकारिता: परिचय और प्रवृत्तियाँ।
- साहित्यिक पत्रकारिता में अनुवाद की भूमिका।
- महत्वपूर्ण पत्र-पत्रिकाएँ: बनारस अखबार, भारत मित्र, हिन्दी प्रदीप, स्वेदश, प्रताप, कर्मवीर, जनसत्ता, हंस, कथादेश व हरियाणा की साहित्यिक पत्रिकाएं

संदर्भ पुस्तकें

- हिन्दी पत्रकारिता- कृष्ण बिहारी मिश्र, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली, 1969
- हिन्दी पत्रकारिता का वृहत् इतिहास - अर्जुन तिवारी, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
- विकास पत्रकारिता- राधेश्याम शर्मा, हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़, 1990
- हिन्दी पत्रकारिता : प्रेमचंद और हंस- रत्नाकार पाण्डेय, प्रवीण प्रकाशन, दिल्ली, 1988
- विधि पत्रकारिता : चिन्ता और चुनौती- पवन चौधरी, विधि सेवा, दिल्ली, 1993
- हिंदी पत्रकारिता- कृष्ण बिहारी मिश्र
- पत्रकारिता के विविध संदर्भ- डॉ. वशीधर लाल
- पत्रकारिता हेतु लेखन - डॉ. निशान्त सिंह
- भारतीय समाचार पत्रों का इतिहास- जेफ्रीरोबिन्स

BH-HIN-CC-602-प्रयोजनमूलक हिंदी

क्रेडिट - 6 **कुल अंक-100**

समय-3 घंटे, **परीक्षा अंक - 80, आंतरिक मूल्यांकन - 20**

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

प्रयोजनमूलक हिंदी भाषा की जानकारी देना। संविधान में भाषा संबंधी प्रावधानों की जानकारी देना। विभिन्न कार्यालयों की जरूरतों को पहचानना।

पाठ्यक्रम के संभावित परिणाम

- हिंदी भाषा में कार्यालयी कार्य करने का ज्ञान होगा।
- संविधान में भाषा संबंधी प्रावधानों को जान सकेंगे।
- शासन-प्रशासन के कार्यों को हिंदी भाषा में करने की दक्षता।
- बैंक, विधि, वाणिज्य संबंधी कार्यों में दक्षता।

परीक्षा संबधी निर्देश - पाठ्यक्रम चार इकाइयों में विभक्त है। प्रश्न पत्र तीन खंडों में विभक्त होगा।

- **समीक्षात्मक प्रश्न -** निर्धारित पाठ्यक्रम में से 7 समीक्षात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे। विद्यार्थी को 4 का उत्तर देना होगा। प्रत्येक के लिए 10 अंक निर्धारित हैं।
- **लघूत्तरी प्रश्न -** निर्धारित समस्त पाठ्यक्रम में से दस लघूत्तरी प्रश्न पूछे जाएंगे। विद्यार्थी को इनमें से छः के (लगभग 150 शब्दों में) उत्तर देने होंगे। प्रत्येक के लिए 5 अंक निर्धारित हैं।
- **वस्तुनिष्ठ प्रश्न -** निर्धारित समस्त पाठ्यक्रम में 10 वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जाएंगें। विद्यार्थी को प्रत्येक का उत्तर देना होगा। इसमें कोई विकल्प नहीं होगा। प्रत्येक के लिए 1 अंक निर्धारित हैं।

पाठ्य विषय

- मातृभाषा हिंदी, सम्पर्क भाषा,
- राजभाषा के रूप में हिंदी, बोलचाल की हिंदी, संविधान में हिंदी।
- हिन्दी की शैलियाँ: हिन्दी, उर्दू और हिन्दुस्तानी।
- हिन्दी भाषा का विकास,
- हिन्दी का मानकीकरण।
- हिन्दी के प्रयोग क्षेत्र: भाषा प्रयुक्ति की संकल्पना, वार्ता-प्रकार और शैली।
- प्रयोजनमूलक हिन्दी के प्रमुख प्रकार: कार्यालयी हिन्दी और उसके प्रमुख लक्षण,
- वैज्ञानिक हिन्दी और उसके प्रमुख लक्षण,
- व्यावसायिक हिन्दी और उसके लक्षण,
- संचार माध्यम (आकाशवाणी, दूरदर्शन, चलचित्र) की हिन्दी और उसके प्रमुख लक्षण।
- भाषा व्यवहार: सरकारी पत्राचार,
- टिप्पणी तथा मसौदा-लेखन,
- सरकारी अथवा व्यावसायिक पत्र-लेखन।
- हिन्दी में पारिभाषिक शब्द निर्माण प्रक्रिया एवं प्रस्तुति।

सन्दर्भ पुस्तकें

- प्रयोजनमूलक हिन्दीः सिद्धांत और प्रयुक्ति- डॉ. जितेन्द्र कुमार सिंह
- प्रयोजनमूलक हिन्दी- विनोद गोदारे
- प्रयोजनमूलक हिन्दी- दंगल झाल्टे
- प्रयोजनमूलक हिन्दी- डॉ. माधव सोन टक्के
- प्रयोजनमूलक हिन्दी की नयी भूमिका- कैलाशनाथ पाण्डेय
- प्रयोजनमूलक हिन्दी- प्रो. रमेश जैन
- राजभाषा सहायिका- अवधेश मोहन गुप्त

BH-HIN-DSE-603-अस्मितामूलक विमर्श और हिंदी साहित्य

क्रेडिट - 2 **कुल अंक-80**

समय-1.30 घंटे, **परीक्षा अंक - 40, आंतरिक मूल्यांकन - 10**

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

अस्मितामूलक विमर्श और साहित्य से परिचय

पाठ्यक्रम के अपेक्षित परिणाम

- दलित विमर्श व साहित्य के सैद्धांतिक व सौंदर्यात्मक पहलुओं के विविध आयामों की समझ।
- स्त्री विमर्श व साहित्य के सैद्धांतिक व सौंदर्यात्मक पहलुओं के विविध आयामों की समझ।
- आदिवासी विमर्श व साहित्य के सैद्धांतिक व सौंदर्यात्मक पहलुओं के विविध आयामों की समझ।
- दलित, स्त्री व आदिवासी विभिन्न विधाओं में रचित साहित्य से परिचय।

परीक्षा संबधी निर्देश - प्रश्न पत्र पांच खंडों में विभक्त होगा।

- **व्याख्या खंड** - पाठ्यक्रम में निर्धारित रचनाओं से दो पाठांश दिए जायेंगे। विद्यार्थी को किसी एक की संदर्भ सहित व्याख्या करनी होगी। इसके लिए 10 अंक निर्धारित हैं। निर्धारित रचनाओं से दो पाठांश दिए जायेंगे
- **पाठ-बोध खंड -** पाठ्यक्रम में निर्धारित रचनाओं से एक पाठांश तथा तत्संबंधी 5 प्रश्न दिए जायेंगे। विद्यार्थी को उस पाठांश के आधार पर उत्तर देने होंगे। इसके लिए 10 अंक निर्धारित हैं।
- **समीक्षात्मक खंड -** पाठ्यक्रम में निर्धारित पाठ्य विषय व निर्धारित रचनाओं के परिचय, विषयवस्तु, मूल संवेदना व रचना-सौष्ठव संबंधी पांच समीक्षात्मक प्रश्न पूछे जायेंगें। विद्यार्थी को किंही तीन का उत्तर देना होगा। प्रत्येक के लिए 10 अंक निर्धारित हैं।
- **लघूत्तरी खंड -** निर्धारित पाठ्यक्रम में से सात लघूत्तरी प्रश्न पूछे जाएंगे। विद्यार्थी को इनमें से चार के उत्तर (लगभग 150 शब्दों में) देने होंगे। प्रत्येक के लिए 5 अंक निर्धारित हैं।
- **वस्तुनिष्ठ खंड -** निर्धारित समस्त पाठ्यक्रम में से 10 वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जाएंगें। विद्यार्थी को प्रत्येक का उत्तर देना होगा। इसमें कोई विकल्प नहीं होगा। इसके लिए 10 अंक निर्धारित हैं।

पाठ्य विषयः

- दलित विमर्श: अवधारणा और आंदोलन, फुले और अम्बेडकर
- स्त्री विमर्श: अवधारणा और मुक्ति आंदोलन (पाश्चात्य और भारतीय संदर्भ)
- आदिवासी विमर्श: अवधारणा और आंदोलन

विमर्शमूलक साहित्य:

व्याख्या के लिएः नगाड़े की तरह बजते शब्द(आंरभिक दस कविताएं) निर्मला पुतुल - (कविता)

पाठ बोध के लिएः स्त्री के अर्थ स्वातंत्र्य का प्रश्न (शृंखला की कड़िया) - महादेवी वर्मा

समीक्षात्मक प्रश्नों के लिएः दाई (उपन्यास) - टेकचंद

सहायक पुस्तकें

- दलित दृष्टि : गेल ओमवेट
- आधुनिकता के आईने में दलित - सं. अभय कुमार दुबे
- अस्मिताओं के संघर्ष में दलित समाज - ईश कुमार
- दलित कविता का संघर्ष - कंवल भारती
- दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र - शरण कुमार लिम्बाले
- स्त्री उपेक्षिता (अनु. प्रभा खेतान) - सिमोन द बोउवा
- उपनिवेश में स्त्री - प्रभा खेतान
- स्त्रीत्व का मानचित्र - अनामिका
- स्त्रीवादी साहित्य विमर्श - जगदीश्वर चतुर्वेदी
- औरत की कहानी - सं. सुधा अरोड़ा

BH-HIN-DSE-604-लोक साहित्य

क्रेडिट - 2 **कुल अंक-80**

समय-1.30 घंटे, **परीक्षा अंक - 40, आंतरिक मूल्यांकन - 10**

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

लोक साहित्य व लोक संस्कृति से परिचय।

पाठ्यक्रम के अपेक्षित परिणाम

लोक साहित्य की विभिन्न विधाओं से परिचय।
हरियाणवी लोक-संस्कृति के विभिन्न पक्षों से परिचय।
लोक साहित्य एवं लोक संस्कृति के के संकलन, संरक्षण, अध्ययन एवं विश्लेषण में रुचि।

परीक्षा संबधी निर्देश - प्रश्न पत्र पांच खंडों में विभक्त होगा।

- **व्याख्या खंड** - पाठ्यक्रम में निर्धारित रचनाओं से दो पाठांश दिए जायेंगे। विद्यार्थी को किसी एक की संदर्भ सहित व्याख्या करनी होगी। इसके लिए 10 अंक निर्धारित हैं।
- **पाठ-बोध खंड** - पाठ्यक्रम में निर्धारित रचनाओं से एक पाठांश तथा तत्संबंधी 5 प्रश्न दिए जायेंगे। विद्यार्थी को उस पाठांश के आधार पर उत्तर देने होंगे। इसके लिए 10 अंक निर्धारित हैं।
- **समीक्षात्मक खंड** - पाठ्यक्रम में निर्धारित विषयों से 5 समीक्षात्मक प्रश्न पूछे जायेंगें। विद्यार्थी को किंही तीन का उत्तर देना होगा। प्रत्येक के लिए 10 अंक निर्धारित हैं।
- **लघूत्तरी खंड** - निर्धारित पाठ्यक्रम में से सात लघूत्तरी प्रश्न पूछे जाएंगे। विद्यार्थी को इनमें से चार के उत्तर (लगभग 150 शब्दों में) देने होंगे। प्रत्येक के लिए 5 अंक निर्धारित हैं।
- **वस्तुनिष्ठ खंड** - निर्धारित समस्त पाठ्यक्रम में से 10 वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जाएंगें। विद्यार्थी को प्रत्येक का उत्तर देना होगा। इसमें कोई विकल्प नहीं होगा। इसके लिए 10 अंक निर्धारित हैं।

पाठ्य विषयः

- लोक और लोकवार्ता, लोक संस्कृति की अवधारणा, लोकवार्ता और लोक संस्कृति, लोक संस्कृति और साहित्य, साहित्य और लोक का अंतःसंबंध, लोक साहित्य का अन्य सामाजिक विज्ञानों से संबंध, लोक साहित्य के अध्ययन की समस्याएँ। भारत में लोक साहित्य के अध्ययन का इतिहास
- लोक साहित्य के प्रमुख रूपों का वर्गीकरण।
- हरियाणवी लोक गीत: संस्कारगीत, श्रमगीत, ऋतुगीत,।
- हरियाणवी लोकनाटय स्वांग की परम्परा एवं प्रविधि।
- लोककथा: व्रतकथा, परीकथा, नाग-कथा, कथारूढ़ियाँ और अंधविश्वास।
- हरियाणवी लोकभाषा, मुहावरे, कहावतें, लोकोक्तियाँ, पहेलियाँ।
- हरियाणवी लोकनृत्य

- हरियाणवी लोकसंगीत, रागनी का स्वरूप, विकास और विशेषताएं।

व्याख्या व पाठबोध के लिए

- स्वांग गूगे राजपूत बागड़ देस का - संकलनकर्ता आर. सी. टेम्पल
- 7 लोकगीत व 10 रागनी

सहायक पुस्तकें

- लोक साहित्य की भूमिका -कृष्णदेव उपाध्याय
- भारत का लोक साहित्य -कृष्णदेव उपाध्याय
- हरियाणा का लोक साहित्य - लालचंद गुप्त 'मंगल'
- लोक संस्कृति के क्षितिज - पूर्णचन्द शर्मा
- हरियाणा का लोक साहित्य - शंकर लाल यादव
- हरियाणवी साहित्य और संस्कृति - पूर्णचंद शर्मा
- हरियाणवी लोकधारा (प्रतिनिधि रागनियां) - सं. सुभाष चन्द्र

BH-HIN-GE-605-पाश्चात्य दार्शनिक चिंतन एवं हिंदी साहित्य

क्रेडिट - 6 **कुल अंक-100**

समय-3 घंटे, **परीक्षा अंक - 80, आंतरिक मूल्यांकन - 20**

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

पाश्चात्य दार्शनिक सिद्धांतों से परिचय।

पाठ्यक्रम के अपेक्षित परिणाम

- साहित्य और दर्शन के अंतसंबंधों की जानकारी।
- विभिन्न दार्शनिक मतों की मान्यताओं व स्थापनाओं का ज्ञान।
- पाश्चात्य साहित्य चिंतन का ज्ञान।
- पाश्चात्य ज्ञान का हिंदी साहित्य पर प्रभाव व तुलनात्मक दृष्टि का लिकास।

परीक्षा संबधी निर्देश - प्रश्न पत्र तीन खंडों में विभक्त होगा।

- **समीक्षात्मक प्रश्न** - निर्धारित पाठ्यक्रम में से 7 समीक्षात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे। विद्यार्थी को 4 का उत्तर देना होगा। प्रत्येक के लिए 10 अंक निर्धारित हैं।
- **लघूत्तरी प्रश्न -** निर्धारित समस्त पाठ्यक्रम में से 10 लघूत्तरी प्रश्न पूछे जाएंगे। विद्यार्थी को इनमें से 6 के उत्तर (लगभग 150 शब्दों में) देने होंगे। प्रत्येक के लिए 5 अंक निर्धारित हैं।
- **वस्तुनिष्ठ प्रश्न -** निर्धारित समस्त पाठ्यक्रम में 10 वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जाएंगें। विद्यार्थी को प्रत्येक का उत्तर देना होगा। इसमें कोई विकल्प नहीं होगा। प्रत्येक के लिए 1 अंक निर्धारित हैं।

पाठ्य विषयः

- अभिव्यंजनावाद
- स्वच्छंदतावाद
- अस्तित्ववाद
- मनोविश्लेषणवाद
- मार्क्सवाद
- संरचनावाद
- आधुनिकतावाद
- उत्तर अधुनिकतावाद
- कल्पना, बिंब, फैंटेसी
- मिथक एवं प्रतीक

सहायक पुस्तकें

- पाश्चात्य साहित्य चिंतन - निर्मला जैन, कुसुम बांठिया
- पाश्चात्य काव्य शास्त्र का इतिहास - डॉ. नगेन्द्र
- पाश्चात्य काव्यशास्त्र - कृष्णदेव शर्मा
- पाश्चात्य काव्यशास्त्र - रामपूजन तिवारी
- भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र की पहचान - प्रो. हरिमोहन
- पाश्चात्य काव्यशास्त्र - डॉ. तारक नाथ बाली
- पाश्चात्य काव्यशास्त्र (सिद्धांत और वाद) - डॉ. रामछबीला त्रिपाठी
- पाश्चात्य काव्यशास्त्र (इतिहास सिद्धांत और वाद) - डॉ. भगीरथ मिश्र
- पाश्चात्य काव्य चिंतन - डॉ. करूणाशंकर उपाध्याय
- भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य शास्त्र एवं हिन्दी आलोचना - रामचन्द्र तिवारी
- काव्यशास्त्र : भारतीय और पाश्चात्य - कन्हैयालाल अवस्थी